डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 65 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | गुरुवार 14 दिसम्बर 2023 | मूल्य 2 रुपया

भाजपा का सयानापन और कांग्रेस का बचपना

बचपन में सुनी उस कहानी में सरासर गलती उस साधु की थी, जो जंगल के तोतों को बहेलिए यानी शिकारी का डर दिखाकर केवल यह रटवाता है, 'शिकारी आएगा, दाना डालेगा, जाल बिछाएगा और तुम्हें पकडकर ले जाएगा।' अंत में हुआ यह कि बहेलिए के जाल में फंसे तमाम तोते यही रट्ट लगा रहे थे कि 'शिकारी आएगा, दाना डालेगा, जाल बिछाएगा और तुम्हें पकडकर ले जाएगा।' यदि साधु की नीयत पूरी तरह खरी होती तो वह तोतों को अपने इस कथन का व्यावहारिक स्वरूप बताता, ताकि वे शिकारी से बचना सीख सकते, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

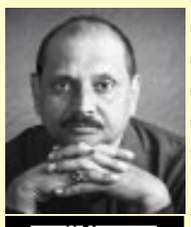

प्रकाश भटनागर

यही स्थिति अब एक बार फिर कांग्रेस की दिख रही है। कर्नाटक में पार्टी की जीत के बाद उत्साह से भरे राहुल गांधी मध्यप्रदेश सहित राजस्थान और छत्तीसगढ में जाति आधारित जनगणना के 'प्रवचन' देते रहे, तब कई बार यही प्रतिध्वनित हुआ कि वह कांग्रेस के वोट बैंक के हिसाब से अनुसूचित जाति, जनजाति और अन्य पिछडा वर्ग को यही कहकर डरा रहे हैं कि यदि यह जनगणना नहीं हुई तो उनका नुकसान हो जाएगा। राहुल की कोशिश रही कि बिहार में हुई इस जाति आधारित जनगणना के के लिए शेष जगहों पर संभावनाएं मजबूत की जा सकें। नतीजा जो हुआ, वह सामने है।

यहां उस कहानी का चरित्र याद आता है, जो कहता है, ''मेरा विरोधी जो सोचता है, मैं उसे , कर देने में विश्वास रखता हूँ।' तो हुआ यही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी ने लगातार एक ही बात 'सामाजिक समरसता' की है। इस सोच को प्रत्यक्ष रूप से निशाने पर लिया गया। लेकिन आज क्या हुआ? हुआ यह कि मध्यप्रदेश में डॉ. मोहन यादव के रूप में एक बार फिर ओबीसी वर्ग का मुख्यमंत्री है और ब्राह्मण समुदाय वाले राजेंद्र शुक्ल तथा दलित वर्ग के प्रतिनिधि जगदीश देवडा उप मुख्यमंत्री हैं। छत्तीसगढ में यदि इस राज्य की सबसे बडी आबादी यानी जनजातीय समुदाय के विष्णु देव साय मुख्यमंत्री हैं तो उनके साथ अरुण साव (ओबीसी) एवं विजय शर्मा (ब्राह्मण) उप मुख्यमंत्री बनाए गए हैं। राजस्थान में इधर भजनलाल शर्मा ब्राह्मण मुख्यमंत्री हैं तो उधर दलित प्रेमचंद्र बैरवा के साथ ही राज्य में आज तक भावनात्मक रूप से असर रखने वाले राजघराने की दीया कुमारी को भी उप मुख्यमंत्री की कमान दी गई है।

इसमें कोई गूढार्थ नहीं है, सादा-सा निहितार्थ है। वह यह कि इस मामले में भी कांग्रेस व्यवहारिकता के हिसाब से मुद्दों के टोटो और उनके नाम पर तोता रटंत की शिकार होकर रह गयी। जबकि भाजपा ने एक बार फिर दिखा दिया कि वह अपने सामाजिक समरसता वाले वाक्य के अनुरूप आगे बढने में ही यकीन रखती है। ऐसा इस मौके पर पहली बार नहीं हुआ है। भाजपा ने देश के सियासी परिदृश्य में स्वयं के लिए, स्वयं के प्रयासों से 'नया जोश' वाली मुद्रा में लगभग हर अवसर पर यह कर दिखाया है और देश की सबसे बूढी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस इस दौड में कभी हांफती दिखती थी और आज हांफने के साथ ही किलपने के लिए भी अभिशप्त है। रही-सही कसर में 'कोढ में खाज' तब साफ दिखाई देती है, जब भाजपा (विशेषकर नरेंद्र मोदी) से लगातार मिल रही असफलताओं से उपजे अंधे विरोध के चलते अपनी वैचारिक दरिद्रता के नाले में वामपंथी विचारधारा के परनाले के मिश्रण का ही सहारा ढूंढ रही है। बचपन की कहानी में यकीनन गलती उस साधु की थी, लेकिन कांग्रेस के इस घोर बचपने की सत्यकथा में किसका दोष है, यह अलग से कहने की आवश्यकता है क्या? खासतौर से तब, जब मुकाबला भाजपा के सयानेपन से हो रहा हो और उसके नतीजे रह-रहकर सामने आते ही जा रहे हैं।

मध्यप्रदेश में पहली बार 1967 में बनाया गया था डिप्टी सीएम

देवड़ा के आने के बाद दलितों को नई लीडरशिप का भरोसा, विपक्ष के जातिगत जनगणना की भी काट

मंदसौर, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। प्रदेश में इस बार दो डिप्टी सीएम बनाए गए है। जिसमें संसदीय क्षेत्र के मल्हारगढ़ विधानसभा से विधायक जगदीश देवड़ा भी शामिल है। दलितों को अब नई लीडरशीप का भरोसा इस निर्णय से है। इन्हीं मतों को साधने के लिए भाजपा ने यह कदम उठाया है। इसके अलावा बात करें डिप्टी सीएम पद की तो सबसे पहले मध्य प्रदेश में डिप्टी सीएम संसदीय क्षेत्र से ही बनाया गया था। मध्यप्रदेश में 1967 में कांग्रेस के बागी विधायकों, जनसंघ और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सहयोग से पहली गैर कांग्रेसी सरकार बनी। इसमें कांग्रेस के बागी गोविंद नारायण सिंह को मुख्यमंत्री बनाया गया था। उस सरकार में जनसंघ के वीरेंद्र कुमार सखलेचा को उप मुख्यमंत्री बनाया गया था। यह गठबंधन की सरकार में सबसे बड़े दल को सम्मानजनक प्रतिनिधित्व देने की कोशिश के तहत उठाया गया कदम था। मध्यप्रदेश में उप मुख्यमंत्री का यह पहला प्रयोग था। हालांकि, यह सरकार केवल 19 महीने ही चल पाई। गोविंद नारायण सिंह 1969 में कांग्रेस में वापस लौट गए और उसके पखवाड़े भर के भीतर संविद सरकार का अंत हो गया था।

थावरचंद गेहलोत के बाद अब जगदीश देवड़ा...

छात्र जीवन से राजनीति कर रहे जगदीश देवड़ा सातवीं बार विधानसभा पहुंचे हैं। मालवा क्षेत्र से आने वाले देवड़ा पिछली सरकार में वित्त मंत्री थे। शिवराज सरकार के 2013 से 2018 के कार्यकाल को छोड़ सभी मंत्रिमंडल में उन्हें जगह मिलती रही है। ऐसे में वे शिवराज की भी पसंद कहे जा रहे हैं। थावरचंद गहलोत के सक्रिय राजनीति से हटने के बाद देवड़ा अनुसूचित जाति वर्ग से भाजपा के सबसे बड़े नेता बनकर उभरे हैं। वर्ष 2018 से पहले आरक्षण बचाओ आंदोलन ने अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों पर भाजपा का नुकसान किया था। इसकी वजह से पार्टी को सत्ता गंवानी पड़ी। 2023 के विधानसभा चुनाव में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों पर भाजपा को मिले समर्थन ने उनका दावा मजबूत किया। कहा जा रहा है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में अनुसूचित जाति के वोटरों को साधने के लिए देवड़ा को चेहरा बनाया गया है।

1980, 1993 और 1998 में कांग्रेस ने बनाए डिप्टी सीएम...

1980 में कांग्रेस की सरकार बनी तो किसी आदिवासी नेता को मुख्यमंत्री बनाने की मांग उठ रही थी। कांग्रेस ने अर्जुन सिंह को मुख्यमंत्री बनाने के साथ मनावर के शिवभानु सिंह सोलंकी को उप मुख्यमंत्री बनाया। यह बहुमत की सरकार में जातीय प्रतिनिधित्व देने के लिए उप मुख्यमंत्री बनाने का पहला प्रयोग था।1993 में दिग्विजय सिंह सरकार में ओबीसी चेहरे के तौर पर

कसरावद के सुभाष यादव को उप मुख्यमंत्री बनाया गया। वहीं, छत्तीसगढ़ की रामपुर सीट के विधायक प्यारेलाल कंवर को आदिवासी नेतृत्व के तौर पर उप मुख्यमंत्री का ओहदा दिया गया।1998 में भी दिग्विजय सिंह की ही सरकार में सुभाष यादव और कुक्षी की जमुना देवी को उप मुख्यमंत्री बनाया गया था।

शामगढ़ जलकल विभाग में 18 लाख का खेल

नगर परिषद के तीन कर्मचारी निलंबित, नामांतरण के लिए मांगी रिश्वत

मंदसौर, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। शामगढ़ नगर परिषद में 18 लाख रुपए का घपला सामने आया है। जलकर विभाग में घपला करने वाले सहित नामांतरण के लिए रिश्वत मांगने वाले कुल तीन कर्मचारियों को निलंबित किया गया है। यह जानकारी नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती कविता यादव ने दी।

रसीद कट्टों की आधी राशि हर माह गायब...

नप अध्यक्ष कविता यादव ने बताया कि नगर परिषद में 18 लाख रूपए का जलकर राशि में गबन उजागर हुआ है। इस मामले मे दो कर्मचारी आस्था त्रिवेदी एवं नरेन्द्र सेठिया की संलिप्तता पाऐ जाने पर अध्यक्ष श्रीमती यादव ने निलंबित करते हुए दोनो के खिलाफ पुलिस में प्रकरण दर्ज कराया है। सहायक ग्रेड 03 कर्मचारी आस्था त्रिवेदी व नरेन्द्र सेठिया स्थायी कर्मी द्वारा जलकर राशि का गबन सामने आया है। पिछले तीन सालो से दोनों कर्मचारी जलकर की राशि को आधी-आधी मिल बांटकर अपने जेब में रख रहें थे। अध्यक्ष कविता यादव ने जलकर राशि की समीक्षा की तो मालूम पड़ा कि जलकर की राशि तो शतप्रतिशत आ रहीं है। मगर कुछ दिनों से राशि दिनो दिन कम क्यों मिल रहीं है। इसकी जांच पड़ताल करवाई तो पता चला कि दोनों कर्मचारी हर माह आधी आधी राशि जेब में रख रहे थे। जलकर राशि के रसीद कट्टो की आधी राशि हर माह गायब हो रही थी।

उल्लेखनीय है कि नगर परिषद में कतिपय कर्मचारी जो कि वर्षो से यहां पदस्थ है। लंबे समय से अनियमितताए किए जाने की शिकायतें समय समय पर होती रही है। मगर कारवाई नहीं होने से मर्ज दिनों दिन बढ़ता जा रहा है । पीएम आवास योजना में भी करीबन 30 लाख का घोटाला वाला प्रकरण भी अभी तक जिला कलेक्टर कार्यालय में लंबित पड़ा हुआ है। उसमें भी कोई कार्रवाई नही हुई है।

नामांतरण के लिए रिश्वत की मांग करने वाला भी निलंबित–अध्यक्ष कविता यादव ने बुधवार को परिषद में पत्रकारों से चर्चा करते हुए बताया कि स्थायी कर्मी नरेन्द्र सेठिया द्वारा 7 लाख 12 हजार 280 ... शेष पेज 4 पर

प्रधानमंत्री ने मुस्कुराते हुए नए मुख्यमंत्री की पीठ थपथपाई

भोपाल, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सूबे केनए मुखिया केशपथ ग्रहण में शामिल हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भले ही कोई भाषण नहीं दिया, पर उनके हाव-भाव में भी जन संदेश छुपा था। मुख्यमंत्री की शपथ लेने के बाद डा. मोहन यादव उनके पास पहुंचे तो मोदी ने खड़े होकर मुस्कुराते हुए उनकी पीठ थपथपाई।

उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा और राजेंद्र शुक्ला से भी वह गर्मजोशी से मिले। सफेद कुर्ता-पाजामा और काले रंग की जैकेट पहने मोदी मंच के बीचोंबीच बैठे। मोदी के दायीं और राज्यपाल मंगुभाई पटेल और फिर नए मुख्यमंत्री मंचासीन थे। इनके दाहिनी ओर बड़ी संख्या में संत उपस्थित थे। संतों के लिए अलग मंच बनाया गया था। बायीं ओर सामने की पंक्ति में राज्यों के मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, शिवराज सिंह चौहान, वीडी शर्मा उपस्थित थे। प्रदेश के अन्य नेता इनके पीछे की पंक्ति में थे। प्रधानमंत्री ने खुद मुख्यमंत्री और दोनों उप मुख्यमंत्रियों व राज्यपाल के साथ मंच पर फोटो खिंचवाया। प्रधानमंत्री जैसे ही मंच पर आए मोदी-मोदी के खूब नारे लगे। बीच में शिवराज सिंह चौहान के समर्थकों ने मामा-मामा के नारे लगाए।

डॉ मोहन यादव का पहला निर्देश, धर्म स्थलों के लाउड स्पीकर पर लगेगी रोक

भोपाल, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने पदभार ग्रहण के बाद पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। उन्होंने पहली कैबिनेट बैठक के निर्णयों की जानकारी दी। खुले में मांस विक्रय पर कडाई बरतने की बात सीएम मोहन यादव ने कही। हर जिले में युवाओं के लिए एक्सीलेंस कॉलेज बनाने की बात भी कही। मध्यप्रदेश के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पहला आदेश जारी किया। आदेश प्राप्त कर गृह विभाग, मप्र शासन ने धार्मिक स्थलों तथा अन्य स्थलों में अनियमित अथवा अनियंत्रित ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग को प्रतिबंधित किए जाने के संबंध में आदेश जारी किए। इससे पहले मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने मंत्रालय स्थित मुख्यमंत्री कक्ष में विधिवत पूजा अर्चना के बाद कार्यभार संभाला। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री जगदीश देवडा, उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल, मुख्य सचिव वीरा राणा और अनेक वरिष्ठ अधिकारी,अन्य जनप्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

सुबह-सुबह मंदसौर में डेमू ट्रेन के इंजन में खराबी

नया इंजन आने पर ढाई घंटे बाद हुई रवाना

मंदसौर, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। बुधवार सुबह मंदसौर स्टेशन पर भीलवाड़ा-रतलाम डेमू यात्री ट्रेन के इंजन के नीचे अचानक धुआं उठता दिखा। इसके बाद ट्रेन को मंदसौर स्टेशन पर ही रोक दिया गया। रतलाम से सेफ्टी टीम और इंजन के आने पर डेमू को करीब ढाई घंटे बाद रतलाम के लिए रवाना किया गया।

मिली जानकारी के अनुसार बुधवार सुबह 8.30 बजे भीलवाड़ा रतलाम डेमू ट्रेन मंदसौर के प्लेटफॉर्म नम्बर 01 पर पहुंची। इसी दौरान ट्रेन के गार्ड ने इंजन के नीचे से धुआं निकलते देख पायलट और स्टेशन मास्टर को सूचना दी। गाड़ी को रोक कर रतलाम डीआरएम को सूचना भेजी गई। ट्रेन की बोगी को इंजन से अलग करने की सुविधा मंदसौर में नहीं है। इसलिए ट्रेन को प्लेटफॉर्म एक पर ही खड़ा किया गया। करीब दो घंटे बाद रतलाम से टेक्निकल टीम एक इंजन के साथ मंदसौर पहुंची और इंजन से बोगी को अलग कर दूसरे इंजन के साथ ट्रेन को रवाना किया। करीब ढाई घंटे की देरी से ट्रेन को रतलाम के लिए रवाना किया। रतलाम से आई टेक्निकल टीम ने बताया कि इंजन के नीचे डीपीसी पार्ट्स में तकनीकी खराबी के कारण इंजन के नीचे धुआं निकलने लगा था। टेक्निकल टीम द्वारा इंजन में सुधार कार्य किया गया।

सर्दी से राहत नहीं, छाए रहे बादल

मंदसौर, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। उत्तरी छोर से आ रही ठंडी हवाओं से अंचल में तेज ठंड का दौर पुनः शुरू हो गया है। दिन और रात सर्द होने लगे हैं। बुधवार को भी दिन भर बादल छाए रहे।

मौसम के जानकारों के अनुसार उत्तर भारत में पश्चिमी विक्षोभ के एक्टिव होने का असर मध्यप्रदेश में भी देखने को मिल रहा है। अगले दो दिन 14-15 दिसंबर को प्रदेश के कई शहरों में बादल छा सकते हैं।हालांकि, बारिश होने का अनुमान नहीं है। तापमान में भी ज्यादा गिरावट नहीं आएगी। पश्चिमी विक्षोभ के कमजोर होने के बाद तापमान में गिरावट सम्भव है।

जिले में अधिकतम तापमान 13 डिग्री और न्यूनतम तापमान 23 डिग्री के आसपास बना हुआ है। मौसम वैज्ञानिक अशफाक हुसैन ने बताया कि उत्तर भारत में वेस्टर्न डिस्टरबेंस की वजह से मध्यप्रदेश में भी हल्के बादल रहेंगे। हालांकि, बादल काफी उंचाई पर हैं, इसलिए बारिश की संभावना नहीं है।

कार की टक्कर से बाईक सवार व पैदल जा रहा युवक घायल

नीमच, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सिटी थाना क्षेत्र के महू-नीमच मार्ग पर टाटा शोरूम के पास एक हादसा हो गया। जिसमें एक लापरवाह कार चालक ने बाइक सवार और एक पैदल जा रहे व्यक्ति को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बाइक चालक और पैदल जा रहा व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। जिन्हें 108 एंबुलेंस की सहायता से तत्काल नीमच के बड़े अस्पताल ले जाया गया। जहां दोनों का उपचार जारी है।

बताया जा रहा है कि तेज रफ्तार कार चालक ने लापरवाही से कार चलाते हुए पहले बाइक सवार को टक्कर मारी, उसके बाद पैदल जा रहे एक और व्यक्ति को टक्कर मार दी। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। इस हादसे में नीमच के बाईक सवार गोविंद पिता फतेहसिंह भाटी और पैदल जा रहे महेंद्र पिता जगदीश निवासी बड़ी सादड़ी को गम्भीर चोट आई है। महेंद्र के बयान नहीं हुए हैं, उसे अभी तक होश नहीं आया है। वहीं सिटी थाना पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

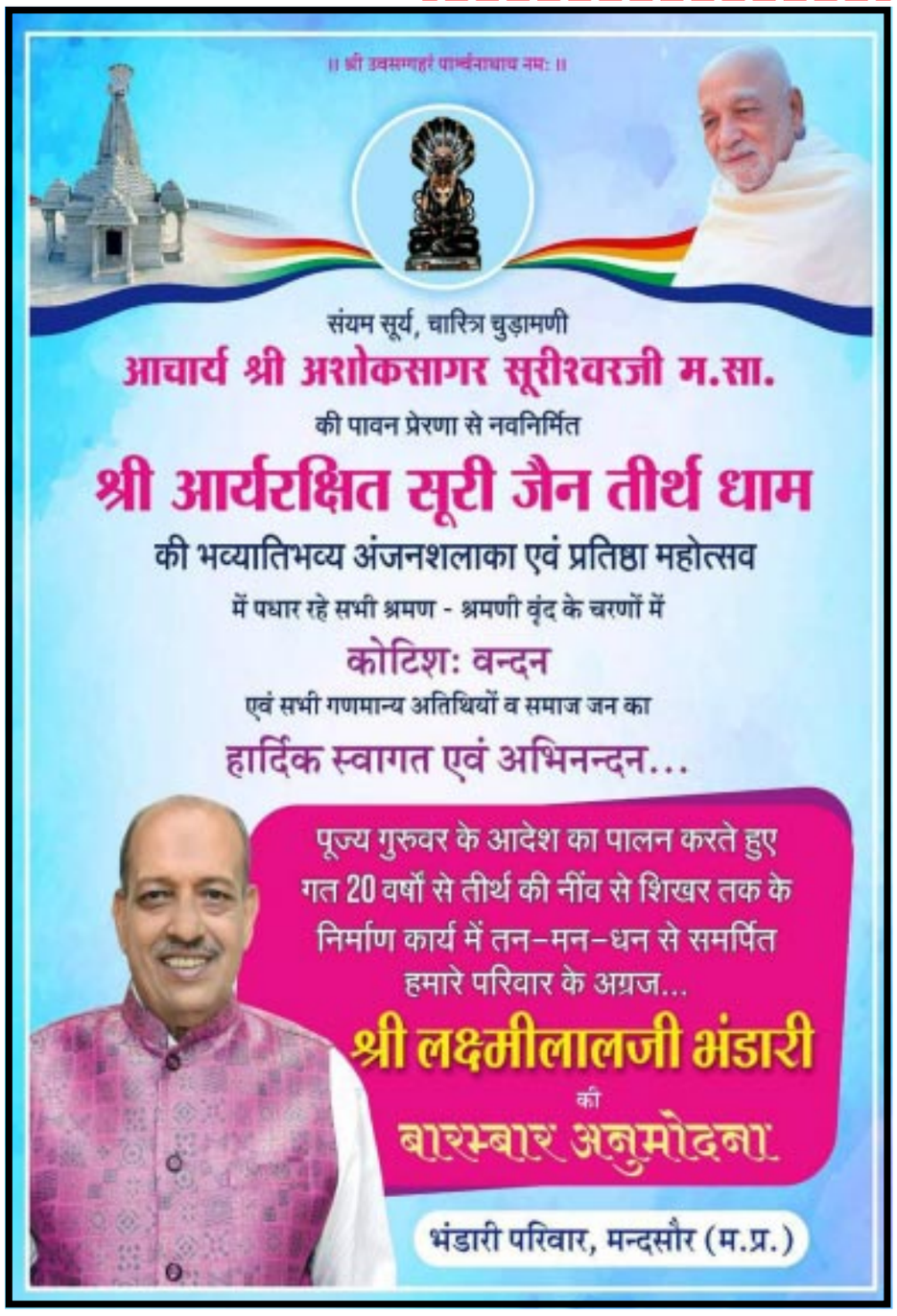

विचार-मंथन

समझौतों के आधार पर एफआईआर रद्द करना अनुचित

यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि बच्चों का अपहरण और उनकी तस्करी गंभीर समस्या बन चुकी है। ऐसे में किसी बच्चे के अपहरण के एक मामले में समझौते के आधार पर आरोपी को राहत देने जैसी कोई कानूनी व्यवस्था सामने आती है, तो एक गलत नजीर बनेगी। यही वजह है कि दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक मामले की सुनवाई करते हुए बिल्कुल स्पष्ट रुख अख्तियार किया और अपहरणकर्ता और बच्चे के माता-पिता के बीच हुए समझौते के आधार पर प्राथमिकी को रद्द करने से इनकार कर दिया। अदालत ने साफ कहा कि समझौतों के आधार पर अगर प्राथमिकी रद्द कर दी जाती है तो यह कानून के शासन को कमजोर करने जैसा होगा। गौरतलब है कि संबंधित मामले में एक बच्ची और उसके दो साल के भाई को उनके पड़ोसी ने अपहरण करने के बाद एक दंपति को बीस हजार रुपए में बेच दिया था। फिर अपहृत लड़के के लगातार रोते रहने की वजह से उसे उसके घर वापस छोड़ दिया गया था। बाद में बच्ची को भी ढूंढ लिया गया। इसमें बच्ची को खरीदने वाले दंपति ने इस आधार पर प्राथमिकी रद्द करने का अनुरोध किया था कि उन्हें इस तथ्य की जानकारी नहीं थी कि बच्ची का अपहरण किया गया था।दरअसल, इस मामले में एक पहलू यह है कि आरोपी दंपति की चिकित्सा संबंधी कोई समस्या थी और वे संतान पैदा कर पाने की स्थिति में नहीं थे। इसी आधार पर उन्होंने अदालत से अपने लिए मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की गुहार लगाई। मगर गोद लेने की कानूनी प्रक्रिया के तहत उन्होंने बच्चा हासिल किया होता, तो उनके सामने इस अपराध में एक पक्ष बनने की नौबत न आती। बाद में भले उनका बच्चों के माता-पिता के साथ कोई समझौता हो गया हो, मगर अपहरण और बेचे जाने के जरिए बच्चा पाने का यह तरीका एक गंभीर अपराध की श्रेणी में आता है। बच्चों का अपहरण, शोषण और उनकी तस्करी आज एक संगठित अपराध के तौर पर भी विकसित हो चुका है। आए दिन कहीं न कहीं से बच्चों के लापता होने या अगवा किए जाने की खबरें आती रहती हैं। दिल्ली हाई कोर्ट ने भी इस मसले पर अपना सरोकार जाहिर किया कि बच्चों के अपहरण और तस्करी गंभीर अपराध हैं, जिनका बड़े पैमाने पर समाज के साथ-साथ बच्चों के स्वास्थ्य, अस्तित्व और विकास पर गंभीर असर पड़ता है। संबंधित मामले में एक अफसोसनाक पहलू यह भी था कि बच्चों के माता-पिता चाहते थे कि वे अपहरण के आरोपियों के साथ रहें। संभव है कि बाद की परिस्थितियों में दोनों पक्षों के बीच सुलह हो गई हो, मगर तकनीकी रूप से यह मामला बच्चों के अपहरण और तस्करी का ही था और इसके शिकार बच्चों को बेहद त्रासद जीवन से गुजरना पड़ता है। इसीलिए अदालत ने कहा कि अगर ऐसे मामलों में उदार दृष्टिकोण अपनाया जाता है, तो यह आपराधिक कानून के सिद्धांतों को पराजित करने और इस प्रक्रिया में कानून के शासन को कमजोर करने जैसा होगा। भारत में बच्चे ही अपहरण का सबसे अधिक शिकार हैं। इनमें भी ज्यादा संख्या लड़कियों की होती है। अगवा बच्चों को आमतौर पर बाल मजदूरी या देह व्यापार में झोंक दिया जाता है। ऐसे में इस समस्या पर काबू पाने के लिए कानून के मोर्चे पर सख्ती एक जरूरी कदम हो जाता है। निश्चय ही अदालत का यह कदम बाल अधिकारों, उनकी तस्करी आदि से जुड़े मामलों की सुनवाई में एक नजीर बनेगा।

चुनाव की साख के लिए ईवीएम पर हो पुर्नविचार

विनीत नारायण

चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है, इसे किसी भी दल या सरकार के प्रति पक्षपात होता दिखाई नहीं देना चाहिए। यदि चुनाव आयोग ऐसे सुझावों को जनहित में लेती है तो मतदाताओं के बीच भी एक सही संदेश जाएगा, कि चुनाव आयोग किसी भी दल के साथ पक्षपात नहीं करता। चुनाव लोकतंत्र की नींव होते हैं। किसी देश का भविष्य चुनाव में जीतने वाले दल के हाथ में होता है। चाहें उसे कुल मतदाताओं के एक तिहाई ही मत क्यों न मिले हों। पर उसकी नीतियों का असर सौ फीसदी मतदाताओं और उनके परिवारों पर पड़ता है। इसलिए चुनाव आयोग का हर काम निष्पक्ष और पारदर्शी होना चाहिए। सही है कि छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश की विधानसभाओं के चुनावों के नतीजे चौंकने वाले हैं। क्योंकि इन दोनों राज्यों में पिछले कुछ महीनों से हवा कांग्रेस के पक्ष में बह रही थी। इसलिये सारा विपक्ष हैरान है और हतोत्साहित भी। कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता और कमल नाथ इन परिणामों के लिए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) और चुनाव आयोग को दोषी ठहरा रहे हैं। अपने सैंकड़ों आरोपों के समर्थन में इन नेताओं के कार्यकर्ता तमाम साक्ष्य जुटा चुके हैं। इसी चुनाव में मध्य प्रदेश में डाक से आये मत पत्रों में 171 विधानसभाओं में कांग्रेस जीत रही है यह सूचना चुनाव आयोग के रिकॉर्ड से पता चली है। फिर मध्य प्रदेश में कांग्रेस कैसे हार गई। जिस इलाके के सारे मतदाताओं ने कांग्रेस के पक्ष में वोट दिया था वो भी ये देखकर हैरान हैं कि उनके इलाके से भाजपा को इतने वोट कैसे मिल गये? ऐसे तमाम प्रमाणों को लेकर मध्य प्रदेश कांग्रेस के कार्यकर्ता अपना संघर्ष जारी रखेंगे। ये बात दूसरी है कि चुनाव आयोग उनकी बात पर गौर करेगा या नहीं। जबकि भाजपा इन नतीजों से न केवल अतिउत्साहित है बल्कि विपक्ष की हताशा को वो 'खिसयानी बिल्ली खम्बा नौंचे' बता रही है। बीते कुछ चुनावों में, देश के अलग अलग प्रान्तों में, यह देखा गया है कि इलाक़े की जनता की भारी नाराज़गी के बावजूद वहाँ के मौजूदा विधायक या सांसद ने पिछले चुनावों के मुक़ाबले काफ़ी अधिक संख्या से जीत हासिल की। ऐसे में चुनावी मशीनरी पर सवाल खड़े होना ज़ाहिर सी बात है। जो भी नेता हारता है वो ईवीएम या चुनावी मशीनरी को दोषी ठहराता है। ऐसा नहीं है कि किसी एक दल के नेता ही ईवीएम की गड़बड़ी या उससे छेड़-छाड़ का आरोप लगाते आए हैं। इस बात के अनेकों उदाहरण हैं जहां हर प्रमुख दलों के नेताओं ने कई चुनावों के बाद ईवीएम में गड़बड़ी का आरोप लगाया है। चुनाव आयोग की बात करें तो वो इन आरोपों का शुरू से ही खंडन कर रहा है। आयोग के अनुसार ईवीएम में गड़बड़ी की कोई गुंजाइश ही नहीं है। 1998 में दिल्ली, राजस्थान और मध्य प्रदेश के विधान सभा की कुछ सीटों पर ईवीएम का इस्तेमाल हुआ था। परंतु 2004 के आम चुनावों में पहली बार हर संसदीय क्षेत्र में ईवीएम का पूरी तरह से इस्तेमाल हुआ। सन् 2009 के चुनावी नतीजों के बाद इसमें गड़बड़ी का आरोप भाजपा द्वारा लगा। ग़ौरतलब है कि दुनिया के 31 देशों में ईवीएम का इस्तेमाल हुआ परंतु ख़ास बात यह है कि अधिकतर देशों ने इसमें गड़बड़ी कि शिकायत के बाद वापस बैलट पेपर के ज़रिये ही चुनाव किये जाने लगे। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी जैसे विकसित देश जिनकी टेक्नोलॉजी बहुत एडवांस है और जिन देशों में मानव संसाधन की कमी है उन देशों ने भी ईवीएम को नकार दिया है। इन सब देशों में चुनाव मत पत्रों के द्वारा ही कराये जाते हैं। किसी भी समस्या की शिकायत करने से उसका हल नहीं होता। शिकायत के साथ समाधान का सुझाव भी दिया जाए तो उस पर चुनाव आयोग को गौर करना चाहिए। इस विवाद को हल करने के दो ही तरीक़े हैं एक तो यह कि बांग्लादेश की तरह सभी विपक्षी दल एक जुट होकर ईवीएम का बहिष्कार करें और चुनाव आयोग को मत पत्रों से ही चुनाव कराये जाने के लिए बाध्य करें। दूसरा विकल्प यह है कि चुनाव आयोग ऐसी व्यवस्था करे कि ईवीएम से निकलने वाली डुप्लिकेट की एक पर्ची को मतदाता को दे दिया जाए और दूसरी पर्ची को उसी पोलिंग बूथ में रखी मत पेटी में डलवा दिया जाये। मतगणना के समय ईवीएम और मत पत्रों की गणना साथ-साथ हो। ऐसा करने से यह विवाद हमेशा के लिए ख़त्म हो जायेगा। साथ ही भविष्य में कोई दल सत्तारूढ़ दल पर चुनावों में धांधली की शिकायत नहीं कर पायेगा। जब भी कभी कोई प्रतियोगिता होती है तो उसका संचालन करने वाले शक के घेरे में न आएँ इसलिए उस प्रतियोगिता के हर कृत्य को सार्वजनिक रूप से किया जाता है। आयोजक इस बात पर ख़ास ध्यान देते हैं कि उन पर पक्षपात का आरोप न लगे। इसीलिए जब भी कभी आयोजकों को कोई सुझाव दिये जाते हैं तो यदि वे उन्हें सही लगें तो उसे स्वीकार लेते हैं। ऐसे में उन पर पक्षपात का आरोप नहीं लगता। ठीक उसी तरह एक स्वस्थ लोकतंत्र में होने वाली सबसे बड़ी प्रतियोगिता चुनाव हैं। उसके आयोजक यानी चुनाव आयोग को उन सभी सुझावों को खुले दिमाग़ से और निष्पक्षता से लेना चाहिए। चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है, इसे किसी भी दल या सरकार के प्रति पक्षपात होता दिखाई नहीं देना चाहिए। यदि चुनाव आयोग ऐसे सुझावों को जनहित में लेती है तो मतदाताओं के बीच भी एक सही संदेश जाएगा, कि चुनाव आयोग किसी भी दल के साथ पक्षपात नहीं करता। चुनाव लोकतंत्र की नींव होते हैं। किसी देश का भविष्य चुनाव में जीतने वाले दल के हाथ में होता है। चाहें उसे कुल मतदाताओं के एक तिहाई ही मत क्यों न मिले हों। पर उसकी नीतियों का असर सौ फीसदी मतदाताओं और उनके परिवारों पर पड़ता है। इसलिए चुनाव आयोग का हर काम निष्पक्ष और पारदर्शी होना चाहिए। हमारा संविधान भी चुनावों के स्वतंत्र और निष्पक्ष किये जाने के निर्देश देता है। 1990 से पहले देश के आम मतदाता को चुनाव आयोग जैसी किसी संस्था के अस्तित्व का पता नहीं था। उन वर्षों में धीरे-धीरे चुनावों के दौरान हिंसा, फर्जी मतदान और माफ़ियागिरी का प्रभाव तेजी से बढ़ गया था। उस समय मैंने अपनी कालचक्र विडियो मैगजीन में एक दमदार टीवी रिपोर्ट बनाई थी।

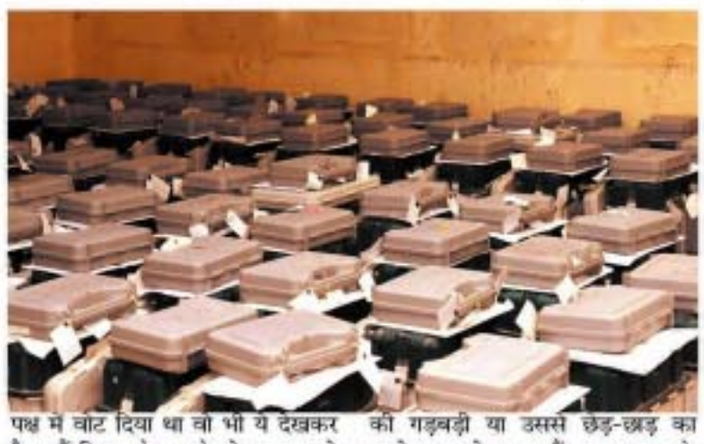

आकाश आनंद ने 2019 में पहली बार रैली को किया था संबोधित

लोकसभा चुनाव से कुछ महीने पहले ही बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को अपना राजनीतिक उत्तराधिकारी घोषित किया है। पार्टी ने सत्तारूढ़ एनडीए और विपक्षी गुट आईएनडीआईए से +पूर्ण दूरी+ बनाए रखते हुए, अपने दम पर चुनाव लड़ने का फैसला किया है। बसपा की शाहजहांपुर जिला इकाई के प्रमुख उदयवीर सिंह ने संवाददाताओं से कहा, +मायावती जी ने आकाश (आनंद) को उत्तराधिकारी घोषित किया है।+ सिंह ने कहा कि आनंद को उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड को छोड़कर पूरे देश में जहां भी पार्टी संगठन कमजोर है, उसे मजबूत करने की जिम्मेदारी दी गई है। हालांकि रविवार को बसपा के आधिकारिक बयान में आनंद की नियुक्ति पर कोई जिक्र नहीं किया गया, सिंह ने कहा कि मायावती ने लखनऊ में पार्टी की अखिल भारतीय बैठक के दौरान इस फैसले की घोषणा की थी। आकाश आनंद मायावती के छोटे भाई आनंद कुमार के बेटे हैं। 28 वर्षीय आकाश को कई मौकों पर पार्टी के कार्यक्रमों में देखा गया है। वह बसपा के राष्ट्रीय समन्वयक के आधिकारिक पद पर है। आकाश आनंद के आधिकारिक एक्स अकाउंट के अनुसार, वह खुद को +बाबा साहेब के दृष्टिकोण का एक युवा समर्थक+ बताते हैं। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा दिल्ली में और एमबीए की डिग्री लंदन में पूरी की। वह साल 2017 में 22 साल की उम्र में भारत लौटे और उसी साल मई में मायावती के साथ सहारनपुर गए, जहां ठाकुर-दलित संघर्ष हुआ था। चार महीने बाद आनंद और आकाश को आधिकारिक तौर पर बसपा कार्यकर्ताओं से मिलवाया गया। यह 2017 के उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव के कुछ महीने बाद हुआ। चुनाव में भाजपा को जीत मिली थी और बसपा 19 सीटों के साथ तीसरे स्थान पर रही थी। बसपा के एक नेता ने याद करते हुए कहा कि पार्टी अध्यक्ष ने आकाश का परिचय उनसे और उनके सहयोगियों से कराते हुए कहा था, +ये आकाश हैं, लंदन से एमबीए की पढ़ाई पूरी की है और अब पार्टी की गतिविधियां देखेंगे। इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट में पहचान उजागर न करने की शर्त पर एक बसपा नेता ने आकाश आनंद के बारे में कहा था, +वह एक अच्छे श्रोता हैं यानी वह लोगों की बातों को ध्यान से सुनते हैं। वह पदाधिकारियों के अलावा कार्यकर्ताओं से भी बातचीत करते हैं। यूपी विधानसभा चुनाव (2022) के दौरान उन्होंने युवाओं के साथ कुछ बैठकें कीं। दूसरे राज्यों में वह वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात करते रहे हैं। बहन जी (मायावती) उन्हें लंबे समय के लिए तैयार कर रही हैं। जब भी वह किसी पार्टी की बैठक के लिए किसी जिले का दौरा करते हैं, तो उनके साथ संबंधित राज्य के कम से कम दो समन्वयक होते हैं जो उन्हें स्थानीय राजनीतिक परिदृश्य के बारे में जानकारी देते हैं और स्थानीय कैडर से परिचित कराते हैं। 2019 में चुनाव आयोग ने मायावती 48 घंटे का प्रतिबंध लगा दिया था। उस दौरान आकाश आनंद ने पहली बार चुनावी रैली को संबोधित किया था। उन्होंने आगरा में समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव और राष्ट्रीय लोकदल नेता अजीत सिंह के साथ मंच साझा किया था। ये तीनों दल लोकसभा चुनाव से पहले बने भाजपा विरोधी और कांग्रेस विरोधी गठबंधन महागठबंधन का हिस्सा थे। हालांकि, जब गठबंधन बसपा को लाभ देने में विफल रहा, तो मायावती गुट से बाहर चली गईं। इसी साल आनंद को बसपा का राष्ट्रीय समन्वयक बनाया गया था। इस साल की शुरुआत में आकाश 14 दिवसीय 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' संकल्प यात्रा' शुरू की थी। इस यात्रा का मकसद आम चुनाव से पहले युवा नेता को तैयार करना था। बाद में उन्हें राजस्थान चुनाव के लिए बसपा का प्रभारी बनाया गया, जिसमें पार्टी केवल दो सीटें जीतने में सफल रही।

बेटियों की बढ़ती इच्छाओं को चाहिए सबका साथ

लड़कियां क्या चाहती हैं? एक बड़ी सी नदी के छोटे से द्वीप पर, और वहां से करीब डेढ़ हजार किलोमीटर दूर एक घने जंगल की पहाड़ी पर जब मैंने यही सवाल पूछा, 'आप क्या चाहती हैं', तो जवाब एक था। उन्होंने मुझे फोन पर झूमे जो पठान... बजाने को कहा, और वे उस गीत पर झूमने लगीं। जब कभी मौका मिलता है, मैं कक्षा नौ और उससे अधिक उम्र के बच्चों से यही सवाल करता हूं। इन लड़के-लड़कियों के जवाब में कई बार समानताएं होती हैं, लेकिन लड़कियों के जवाब में एकरूपता कमोबेश पूरे देश में है। हालांकि, उनकी इच्छाओं पर बंदिशें भी आम हैं, जो लड़कों में नहीं हैं। इसीलिए, वे यह भी पूछ बैठती हैं- क्या मेरा परिवार मुझे यह करने देगा? लड़कियां पढ़ना चाहती हैं ‒ मैंने ऐसी कोई लड़की नहीं देखी, जो आगे नहीं पढ़ना चाहती हो। कई लड़के घर से बाहर जाकर कुछ करना चाहते हैं, पर लड़कियां नहीं। वे हाई स्कूल के बाद कॉलेज जाना चाहती हैं, हालांकि, कॉलेज की दूरी उनके लिए हमेशा चिंता का विषय है। पांच-दस किलोमीटर की दूरी तो उनके लिए सामान्य है। साइकिल मददगार होती है, पर हमेशा नहीं। हो सकता है कि सड़क सुरक्षित न हो, या लंबी दूरी तक साइकिल चलाना माता-पिता को पसंद न हो। शिक्षा के मुफ्त होने के बाद भी अतिरिक्त खर्च उनके लिए एक रुकावट है। इन्हीं सबके कारण तमाम सुधारों के बावजूद अब भी हर साल हजारों लड़कियां स्कूल छोड़ने को मजबूर होती हैं। नौकरी करना चाहती हैं ‒ वे अधिक स्वतंत्रता, सम्मान और वेतन चाहती हैं। ज्यादातर लड़कियां नौकरी करने की हिमायती हैं। वे अपने घर से बाहर काम करना चाहती हैं। अधिकतर की चाहत डॉक्टर, नर्स, शिक्षक या सरकारी अधिकारी बनने की है। कई पुलिस महकमे या सेना में शामिल होना चाहती हैं। कुछ राजनेत्री, गायिका, नर्तकी, अभिनेत्री या खिलाड़ी भी बनना चाहती हैं। मौज-मस्ती करना चाहती हैं ‒ झूमे जो पठान पर डांस कोई अजीब बात नहीं थी। ऐसी प्रवृत्ति करीब-करीब हर जगह दिखी। वे नाचना-गाना चाहती हैं, घूमना चाहती हैं, दुनिया देखना चाहती हैं (कम से कम अपना जिला मुख्यालय तो जरूर देखना चाहती हैं), अच्छे कपड़े पहनना और शृंगार करना चाहती हैं। वास्तव में, शिक्षा, नौकरी और मौज-मस्ती देश भर की लड़कियों की इच्छा है। इनमें से कुछ का उत्प्रेरक इंटरनेट है, जो कुछ साल पहले तक बहुत सुलभ नहीं था। मिसाल के तौर पर, कुछ दशक पहले तक अभिनेत्री बनने का मतलब था माधुरी दीक्षित बनना, लेकिन अब संभावनाएं व्यापक हो गई हैं, यहां तक कि आज कोई लड़की अपना यू-ट्यूब चैनल खोलकर अपने समाज में ही कलाकार बन सकती है। वे उन महिला पुलिसकर्मियों या अधिकारियों के बारे में जानने को उत्सुक होती हैं, जो उन्हीं की तरह सामान्य पृष्ठभूमि से आती हैं। मुझे याद है, सर्दियों की एक धुंधली शाम में कुछ लड़कियां मुझसे अपने गांव में एक माध्यमिक स्कूल खुलवाने की गुजारिश कर रही थीं, क्योंकि नजदीकी स्कूल 15 किलोमीटर दूर था और लड़कों को जहां स्कूल के नजदीक किराये के मकान में रहने की छूट हासिल होती है, लड़कियों को यह सुविधा नहीं मिलती। इसलिए, उन सभी को आठवीं कक्षा के बाद अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। हालांकि, जब उनको पता लगा कि मैं कोई सरकारी अधिकारी नहीं हूं, तो उन्होंने नौकरी की मांग की। यह भी नहीं देने पर, कम से कम एक सिलाई मशीन उपलब्ध कराने की विनती की। इसी तरह, देश के एक अन्य हिस्से में जब मैं गया, तो वहां स्कूल भी था और लड़कियां कॉलेज जाने को संकल्पित थीं। उनको भरोसा था कि उन्हें नौकरी भी मिलेगी। मगर वे अपने लिए कुछ वाद्ययंत्र चाहती थीं, ताकि वे पेशेवर बन सकें। उनमें से एक 'नीरज चोपड़ा' बनना चाहती थी।

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5084

					6			7
	6						9	8
1			4		2		3	
	4	9		6	7		5	
	1						6	
	3		8	9		4	7	
	2		5		1			4
5	8						2	
6			3					

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5083

5	1	7	3	6	9	8	2	4
8	4	9	7	1	2	6	5	3
6	2	3	8	5	4	7	1	9
4	9	8	5	2	3	1	6	7
3	6	5	1	4	7	2	9	8
1	7	2	9	8	6	4	3	5
7	8	1	6	3	5	9	4	2
2	5	6	4	9	8	3	7	1
9	3	4	2	7	1	5	8	6

वर्ग पहेली 5084

संकेतः बाएं से दाएं
1. 7 जून इस भारतीय पेशेवर टेनिस खिलाड़ी का जन्म दिवस है (6)
7. इच्छा, ख्वाहिश, मांग (3)
8. संगीत के साथ तेजी से अंगों को संचालित करना (4)
10. बंदूक को अंग्रेजी में यह कहते है (2)
11. छल, बनावटी, व्यवहार (3)
12. अनेक प्रकार के, एक रिश्ता (2)
14. इस वृक्ष की छाल औषधि के निर्माण में भी प्रयुक्त होती है (2)
16. नाम चयन, नाम निर्देशन, किसी काम के लिए किसी का तकरूर (उर्दू)(3)
19. रुपया-पैसा (अंग्रेजी)(2)
20. सामंजस्य, शर्तों का मिलान (4)
22. संतति, औलाद, पुत्र या पुत्री (3)
23. चुकता किया हुआ, दिया हुआ (2)
24. भीड़ को प्रेरित तथा उत्तेजित करने के लिए किया गया सामूहिक उद्घोष (2)

ऊपर से नीचे
1. मातों की गिनती (3)
2. लगभग 500 फिल्मों में नृत्य पेश कर चुकी ये नृत्यांगना अभिनेत्री (3)
3. रात्रि, निशा, रात, विभावरी, निशा (उर्दू)(2)
4. राहगीर, बटोही, राह या पथ पर चलने वाला (3)
5. नृत्य में एक प्रकार की गति (3)
6. पंख, पर (2)
9. मध्यप्रदेश का यह शहर चूना-पत्थर के शहर के नाम से लोकप्रिय है (3)
12. सुकुमारी, एक सुंदर स्त्री, सुंदरी (उर्दू)(4)
13. आवाज, शब्द, ध्वनि (2)
15. राजा का निवास, अंतःपुर (3)
17. माता का दुलार जो उसकी संतान पर होता है (3)
18. यह प्रसिद्ध भारतीय पार्श्व गायिका थी (23 नवंबर 1930-20 जुलाई 1972) (4)
21. भेड़ या बकरी का बच्चा (3)
22. चैतन्य शक्ति, होश, हिंदी व्याकरण में किसी वस्तु का बोधक-सूचक शब्द (2)

वर्ग पहेली 5083 का हल

पा	कि	स्ता	न		श	र	दा
र्थ		व	न	स्प	ति		ग
	शी	क		पा	र	हो	ना
पा	ह		क	र्ड		लि	
	र	सि	क		इ	क	र
न	प		ह	नु		द	ही
ख	र		रा		प	ह	म
ह	रत			व	र्ष	न	

एचआईवी/एड्स पर राजाराम फैक्टरी में वर्कर्स को दी जानकारी

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। विश्व एड्स दिवस को पखवाडे के रूप में डॉ. जी.एस.चौहान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं डॉ. निशांत शर्मा नोडल अधिकारी के मार्गदर्शन में मनाया जा रहा है। विश्वी एड दिवस पर इस वर्ष की थीम समुदायो को नेतृत्व करने दे के आधार पर जिला एड रोकथाम एवं नियंत्रण इकाई द्वारा टॉक ऑन एचआईवी/एडकार्यक्रम के अंतर्गत अलग-अलग समुदायों में जाकर एडपर जानकारी दी जा रही है इसकी क्रम में राजाराम फैक्टरी में कार्यरत वर्कर्स एवं स्टाफ को जानकारी दी। इस कार्यक्रम में श्री राजेश रजक जिला पर्यवेक्षक ने बतलाया कि एचआईवी/एडक्यू होता है। इसके फैलने के चार कौन से कारण है। पहला असुरक्षित यौन सम्बंधों से, दूसरा संक्रमित रक्त से, तीसरा संक्रमित सुई/सीरिंज के साझा उपयोग से, चौथा एच.आई.वी. संक्रमित मॉ से होने वाले शिशु को, इसके अलावा अन्य कोई कारण नही है। इसके बचाव के लिए जानकारी और सावधानी ही है। आवश्यक होने पर निरोध का उपयोग करें। यह तीन बाते से सुरक्षा देता है एच.आई.वी.से, यौन रोगो से एवं अनचाहे गर्भ से। अभी भी इसका नही इलाज और न ही कोई टीका है। इससे जुड़ी गलत भ्रांतियॉ के विषय में भी बतलाया। एच.आई.वी. का संक्रमण लगने के बाद कोई लक्षण दिखाई नहीं देते। इसलिए संदेह होने पर जॉच अवश्य करा लेना चाहिए। जॉच एवं परामर्श नि:शुल्क उपलब्ध है। श्री दिलीप जैन ने कहा कि इस तरह की कार्यशाला से लोगो में एच.आई.वी. के प्रति जागरूकता आयेगी और निश्चत ही एडकी रोकथाम में सफलता मिलेगी। कार्यक्रम स्थल पर आई.सी.टी.सी. जिला चिकित्सालय का स्टाफ श्रीमती दीप्ति साहु काउंसलर एवं श्री रविन्द्र जोशी लेबटेक्निशियन द्वारा 15 लोगो की एच.आई.वी. स्क्रीनिंग भी की। एच.आई.वी./एडके लिए हेल्पल लाइन नम्ब र 1097 डायल (नि:शुल्क) कर जानकारी प्राप्त कर सकते है। इस अवसर पर श्री दिलीप जैन मैनेजर, श्रीमती सविता शर्मा, श्री महेन्द्र कोठारी, श्री राजेन्द्र कुमार मौड, श्री दिलीप गुप्ता, श्री कल्लुक खॉ युनियन उपाध्यक्ष एवं वर्कर्स उपस्थित थे। सा धन्यरवाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

भानेज को सलियों से पीटा, मामा सहित 3 पर केस दर्ज

पिपलियामंडी, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। मामा ने भानेज को पीटा, पुलिस ने केस दर्ज किया। काचरिया चन्द्रावत निवासी विजय पाटीदार ने पिपलिया पुलिस चौकी पर शिकायत दर्ज कराई कि मेरे नानाजी शंकरलाल पिता तुलसीराम पाटीदार, निवासी कराडिया महाराज, जिला नीमच पिछले 12 वर्षों से हमारे पास काचरिया चन्द्रावतत में रहते हैं। उनकी देखभाल मैं व मेरे पिता सुन्दरलाल पाटीदार कर रहे है। प्रात: 10 बजे मेरे मामा दिनेश व उनके दोनों बेटे राधेश्याम व अनिल आए। मामा दिनेश बोले कि मेरे पिता की देखभाल तुम क्यों कर रहे हो, मैं नही कर सकता हूं क्या। कहते हुए गाली-गलौज की व साथ में लाए लोहे के सलियों से मुझे पीटा। जिससे सिर पर चोंटे आई। मामा ने धमकी दी कि मेरे पिता को घर नही भेजा तो तुझे व तेरे पिताजी को जान से मार दूंगा। पुलिस ने मामा दिनेश व उसके बेटे राधेश्याम व अनिल के खिलाफ केस दर्ज किया।

गायत्री परिवार ने बालाजी मंदिर रामटेकरी पर श्रमदान किया

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे स्वच्छता अभियान के अंतर्गत रामटेकरी स्थित बालाजी मंदिर परिसर में सफाई अभियान चलाया। इस दौरान मंदिर के अंदर बगीचे में पेड पौधों की निराई गुडाई सफाई का कार्य किया और मंदिर के बाहर साईड में जहां गंदगी ज्यादा व्याप्त थी वहां साफ-सफाई की गई।

इस दौरान गायत्री परिवार के सदस्य हर्ष शर्मा ने कहा कि देव स्थान जहां प्रभु की आराधना करने के लिये धर्मालुजन प्रतिदिन जाते है ऐसे स्थानों को गंदा नहीं करना चाहिए। वहां की स्वच्छता एवं पवित्रता बनी रहे यह सभी का कर्तव्य है। आपने कहा कि जो व्यक्ति समाज में अपनी सेवाएं देते है उन समाजसेवियों को मंदिरों की देखरेख व साफ सफाई में भी ध्यान देना चाहिये। समाजसेवी महिने या सप्ताह में एक बार मंदिर के पदाधिकारियों व ट्रस्टियों के साथ श्रमदान करना चाहिये। श्रमदानी रमेश सोनी ने कहा कि आज मंदिर के

बाहर गायों ने गंदगी बहुत कर रखी थी जिसे साफ किया गया। आपने गौपालकों से निवेदन किया कि वह अपनी गायों को बाहर खुले में न छोडे। ठंड भी बहुत है ऐसे में गायों का विशेष ध्यान रखे। गाये मंदिर परिक्षेत्र को गंदा करती है जिसका गौपालक ध्यान रखते हुए गायों को बांधकर रखे। हेमन्त सोनी एडवोकेट ने भी दो घण्टे श्रमदान किया। आपने कहा कि गायत्री परिवार से जुडकर में बहुत अच्छा अनुभव कर रहा हूँ। गायत्री परिवार के सदस्यों की कार्यशैली बहुत अच्छी लगती हैं। आपने कहा कि अपने घर की साफ सफाई के साथ अपने घर के पास बगीचे व मंदिर में भी श्रमदान कर उसको साफ-स्वच्छ रखे। जिससे मन में भी शांति रहती है और शरीर भी स्वस्थ रहता है। श्रमदान में मंदिर ट्रस्टी दिनेश पोरवाल, मुकुल भार्गव, हनुमंतसिंह राणावत, राजेन्द्र शर्मा, गायत्री परिवार के श्रमदानी योगेशसिंह सोम, हेमन्त सोनी, रमेश सोनी, हर्ष शर्मा, उत्कर्ष पोरवाल, इंजि. गायत्रीदेवी ने श्रमदान किया।

एचआईवी एड्स के संबंध में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से कार्यशाला का आयोजन

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश/ अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मंदसौर श्री अजीत सिंह के मार्गदर्शन एवं जिला न्यायाधीश/ सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मंदसौर श्री हर्ष सिंह बहरावत के निर्देशन में एडीआर सेंटर पवन जिला न्यायालय मंदसौर में अरुणोदय सर्वेश्वरी लोक कल्याण समिति के सहयोग से एचआईवी एड के संबंध में कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए जिला न्यायाधीश महोदय ने एचआईवी एडसे प्रभावित व्यक्तियों की सामाजिक उपेक्षा को रेखांकित करते हुए बताया कि इस संबंध में सामाजिक संगठनों को और अधिक संवेदनशीलता के साथ प्रयास किए जाने हैं और साथ ही एचआईवी एडके संबंध में समाज में फैली भ्रांतियां को मिटाने हेतु हम सबको मिलकर प्रयास करने होंगे। कार्यशाला में उपस्थित उपस्थित जनों को जिला न्यायाधीश महोदय द्वारा एचआईवी एड (निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम 2017 के विभिन्न प्रावधानों के बारे में बताया गया। उक्त अधिनियम का उद्देश्य एचआईवी एडसे प्रभावित व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान कर उनके प्रति किए जा रहे भेदभाव को मिटाना है। साथ ही उन्हें साझा रूप से घर में रहने हेतु अधिकार प्रदान किया गया है। गलत सूचना एवं भाव फैलाना एक अपराध है। अधिनियम के अंतर्गत एक शिकायत निवारण प्रणाली भी संस्थित की गई है। कार्यशाला में जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री प्रवीण कुमार, अरुणोदय सर्वेश्वरी लोक कल्याण समिति टी आई प्रोजेक्ट मंदसौर प्रोग्राम मैनेजर शैलेंद्र सिंह भाटी, काउंसलर प्रियंका शर्मा, आउटरीच वर्कर्स, आदिल हुसैन, अंजली मालवीय, प्रीति झा सहित पैरा लीगल वालंटियर्स उपस्थित रहे।

बेटे ने पिता को पीटा, प्रकरण दर्ज

पिपलियामंडी, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। बेटे ने पिता को पीटा। कोटडीमाण्डा निवासी होकमलाल बागरी ने नाहरगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मेरे बेटे अर्जुन ने मुझे बोला कि मेरी मां के साथ झगडा क्यों करता है, कहते हुए गाली-गलौज की, मैंने गाली देने से मना किया तो अर्जुन ने मुझे लकडी से पीटा। जिससे हाथ, पैर में चोंटे आई। पुलिस ने अर्जुन के खिलाफ केस दर्ज किया।

राठौर ने मेवाड़ा सेन समाज को गौरवांवित किया-मारोठिया

मंदसौर गौरव गान के रचिता नन्दकिशोर राठौर का किया अभिनन्दन

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। मेवाडा सेन समाज पंचायत मंदसौर द्वारा सत्यनारायण की बगीची स्थित मंदिर में एक गरिमामय कार्यक्रम आयोजित कर कवि, साहित्यकार, गीतकार व गायक व समाज के गौरव श्री नन्दकिशोर राठौर मंदसौर गौरव गान की रचना करने पर सम्मान किया। इस अवसर पर स्वागत उद्बोधन देते हुए समाज अध्यक्ष ब्रजेश सेन राठौर ने कहा कि श्री राठौर द्वारा विगत 8 दिसम्बर को मंदसौर गौरव दिवस पर मंदसौर गौरव गान की रचना की। आपने मंदसौर के महत्वपूर्ण स्थलों को चित्रित करते हुए एक विडियों भी बनाया है जिसें श्री राठौर ने अपनी आवाज में गौरव गान की सुमधुर प्रस्तुति भी दी है जिसे सम्पूर्ण मंदसौर नगर में सराहा जा रहा है। श्री राठौर के इस कृतित्व से मेवाडा सेन समाज भी गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

कवि श्री नन्दकिशोर राठौर ने कहा कि विगत एक दशक में सेन समाज ने काफी उन्नति की है। समाज के युवा ने अपने मूल व्यवसाय का आधुनिकता प्रदान की है वहीं कई युवा पढ लिखकर आज बडे पदों पर आसीन हुए है। आपने समाज को प्रेरित करते हुए कहा कि समाज में कोई भी प्रतिभा हो तो उसे निखारने का कार्य समाजजन करे। प्रारंभ में समाजजनों ने सेनजी महाराज व मॉ नारायणी माता की महाआरती कर उपस्थितजनों को प्रसाद वितरण किया। तत्पश्चात् श्री नन्दकिशोर राठौर को साफा, शाल, श्रीफल व अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मान किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन सचिव राजेश चौहान ने किया। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ फकीरचंद परिहार, सत्यनारायण सकवाया, कमल बी मारोठिया, मगनीराम गंगवाल, डॉ. घीसालाल गंगवाल, कमल मारोठिया, दिनेश गेहलोद, राजेश चौहान, महेश परिहार, विनोद परिहार, शैलेन्द्र मारोठिया, संजय सकवाया, अनिकेत मारोठिया, रूद्र सेन, अनुज सेन, मंदिर व्यवस्थापक भगवानदास शर्मा आदि समाजजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन महेश परिहार ने किया एवं आभार शैलेन्द्र मारोठिया ने माना। उक्त जानकारी अनिकेत मारोठिया ने दी।

राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2023 दो सत्रों में 17 को

नीमच, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2023 का आयोजन 17 दिसम्बर 2023 को दो सत्रों में प्रात: 10 से 12 बजे तक तथा दोपहर 2.15 से 4.15 बजे तक जिला मुख्या लय के चार परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जा रही है। परीक्षा केन्द्रप बालक उच्चतर माध्योमिक विद्यालय क्रमांक-2 सिविल हास्पीाटल नीमच के पास, महारानी लक्ष्मीकबाई शा.कन्या हायर सेकेण्ड्रील स्कूल नीमच सिटी(कोठी स्कूल)मनासा नाका नीमच, सीताराम जाजू गर्ल्स कॉलेज पुरानी नगरपालिका कार्यालय के पास एवं स्वापमी विवेकानन्द शा.पी.जी.कॉलेज मनासा रोड नीमच, चार परीक्षा केन्द्रा बनाये गये है। आयोग के निर्देशानुसार परीक्षा तिथि 17 दिसम्बर 2023 को निर्विघन एवं सुचारू रूप से परीक्षा सम्पन्न कराने की दृष्टि से उक्त परीक्षा केन्द्रों पर विडियोंग्राफी भी की जायेगी। नीमच जिले के चार परीक्षा केन्द्रों पर एक हजार तीन सौ चार परीक्षार्थी परीक्षा देगें।

रंजिशवश पीटा, केस दर्ज

पिपलियामंडी, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। रंजिशवश मारपीट करने के मामले में पुलिस ने केस दर्ज किया। नारायणगढ थाने पर समिति चोराहा निवासी गोपाल प्रजापत ने शिकायत दर्ज कराई कि मैं खेत पर गोवर्धन से बातचीत कर रहा था, इसी दौरान ओमप्रकाश पिता वरदीचन्द प्रजापत आया, गाली-गलौज की व पत्थरों से हमला किया, जिससे पैर, हाथ पर चोंटे आई व खून निकलने लगा। पुलिस ने ओमप्रकाश के खिलाफ केस दर्ज किया।

जिला पंचायत साधारण सभा की बैठक 20 को

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मंदसौर द्वारा बताया गया कि जिला पंचायत साधारण सभा कि बैठक आयोजित की गई है। बैठक 20 दिसंबर को 1 बजे जिला पंचायत सभाकक्ष में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा विजय पाटीदार की अध्यक्षता में आयोजित की जाएगी।

नीमच जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक 18 को – कलेक्टर श्री दिनेश जैन की अध्याक्षता में जिला स्वास्थ्य कार्यकारी समिति की बैठक 18 दिसम्बर 2023 को दोपहर 12.30 बजे कलेक्टोरेट सभाकक्ष नीमच में आयोजित की गई है। बैठक में संबंधितों से वित्तीय वर्ष 2023-24 की अदयतन जानकारी के साथ उपस्थित होने का आग्रह किया गया है। यह जानकारी सीएमएचओ जिला चिकित्सालय नीमच द्वारा दी है।

टक्कर मारने वाले बाइक चालक पर प्रकरण दर्ज

पिपलियामंडी, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। टक्कर मारने वाले बाइक सवार के खिलाफ पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। मल्हारगढ निवासी ओमप्रकाश पिता नारायण गिरी ने मल्हारगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मैं अपनी बाइक (एमपी 13 जीजे 1990) को लेकर सर्विस रोड पर बांडा खाल पुलिया के पास खडा था, इसी दौरान कुम्हारी निवासी कालूसिंह पिता दशरथसिंह राजपूत बाइक लेकर आया और मुझे टक्कर मार दी, वहां मौजूद लोगों ने मुझे सरकारी अस्पताल भर्ती कराया, बाद में मुझे मंदसौर रेफर किया। दुर्घटना में मुझे चोंटे आई है। पुलिस ने फरियादी के रिपोर्ट पर बाइक चालक के खिलाफ केस दर्ज किया।

स्थायी समिति की बैठक 20 को

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मंदसौर द्वारा बताया गया कि जिला पंचायत की सामान्य प्रशासन स्थायी समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक 20 दिसंबर को 12 बजे जिला पंचायत सभाकक्ष में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा विजय पाटीदार की अध्यक्षता में आयोजित की जाएगी।

विकसित भारत संकल्प यात्रा की तैयारी के संबंध में मनासा में बैठक संपन्न

नीमच, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। विकसित भारत संकल्प यात्रा 16 दिसम्बर से प्रारम्भ हो रही हैं। मनासा एसडीएम श्री पवन बारिया की अध्यक्षता में बुधवार को ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों एवं सचिवों की बैठक जनपद सभा कक्ष में आहूत की गई। बैठक में केंद्र सरकार की विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओके क्रियान्वयन एवं राज्य सरकार के समन्वयक पर एवं रूट चार्ट की तैयारी के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए गए। बैठक में जनपद सीईओ श्री अरविंद डामोर सहित विकासखंड स्तरीय सभी विभागों के अधिकारी एवं पंचायतो के सचिव उपस्थित थे।

शिवना के किनारे 200 मीटर की परिधि के विद्युत कनेक्शन किये विच्छेद

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव ने जिले में श्री पुशपतिनाथ मंदिर पुलिया बांध से रामघाट तक तथा रामघाट बांध से कंथार बांध तक शिवना नदी के दोनों किनारों तथा बुगलिया नाला एवं तैलिया तालाब से 200 मीटर की परिधि के कृषकों द्वारा विद्युत/डीजल मोटर पंप आदि से अन्य संसाधनों से सिंचाई जल लेने पर तत्काल प्रभाव से अन्य आदेश तक प्रतिबंध लगाया गया है। पेयजल व्यसस्था को ध्यान में रखते हुए लोक स्वास्थय यांत्रिकी विभाग एवं नगरपालिका को आदेशित किया गया कि नगर मे जल प्रदाय योजना का मुख्य स्त्रोत शिवना नदी है। इसलिए श्री पुशपतिनाथ मंदिर पुलिया बांध से कंथार बांध तक शिवना नदी के दोनों किनारों एवं बुगलिया नाला एवं तेलिया तालाब से 200 मीटर की परिधि के कृषकों के विद्युत कनेक्शन तत्काल प्रभाव से विच्छेद किया जाता है।

नपा ने विशेष स्वच्छता अभियान चलाया

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। नगर पालिका परिषद मंदसौर में शासन आदेशानुसार विशेष स्वच्छता अभियान अंतर्गत नगर पालिका परिषद अध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर महोदया एवं मु.नपा.अधि.श्री सुधीर कुमार सिंह के निर्देशानुसार नागरिकों और सामाजिक संगठनों के समन्वय से सफाई अभियान चलाया गयाँ जिसमे आवासीय क्षेत्र व सार्वजनिक क्षेत्र में नागरिकों की सहभागिता से सफाई करायी गयी अभियान में युवा नागरिकों और सामाजिक संगठनों भाग लेकर अभियान को सफल बनया गयाँ इस अभियान का मुख्य उद्देश्य यह था की नागरिकों द्वारा शहर में सफाई व्यवस्था बनाये रखे ,सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करें एवं सफाई मित्रों का सम्मान करें।

खेत के रास्ते से निकलने पर की मारपीट, दम्पत्ति सहित 3 पर केस दर्ज

पिपलियामंडी, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। खेत की मेढ के पास रास्ते से निकलने पर मारपीट करने के मामले में पुलिस ने दम्पत्ति सहित तीन आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया। खात्याखेडी निवासी ईश्वरलाल पिता पन्नालाल धनगर ने नाहरगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि हमारे खेत जाने के लिए जाने वाले रास्ते से निकलने पर दिनेश पिता देवीलाल धनगर दिनेश की पत्नी कलाबाई, पिता देवीलाल धनगर ने रास्ता रोका, व जाने से मना करते हुए गाली-गलौज कर लकडियों से पीटा। जिससे नाक, सिर, पीठ व पैर में चोंट आई। पुलिस ने तीनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया।

सॉरी पापा

वैदेही कोठारी
स्वतंत्र पत्रकार

लक्की हमेशा अपने पापा योगेश से चिढ चिढ करता था, उसकी एक ही शिकायत होती पापा से, ये अपना धंधा छोड दो कुछ और करो, नौकरी करो!, आप क्यों नहीं समझते! 'मेरे दोस्त लोग मुझे चिडाते है, मज़ाक बनाते है'! देख बेटा -मेरे पिता भी यही करते थे' कोई काम धंधा छोटा नहीं होता,' अपनी जीविका इससे चल रही है, इस काम में क्या बुराई है!, यह अच्छा है, अक्सर बाप बेटे में इसी बात को लेकर बहस होती रहती थीं एक दिन लक्की कॉलेज से घर आया गुस्से में बोला, 'पापा अब तो हद हो गई! आप अब यह काम नहीं करोगे!, आज मेरे दोस्त मुझे फिर चिडा रहें थे,, 'पानी बताशा बेचने वाले की औलाद, तू तो बताशे का पानी बना, तेरे से कुछ नहीं होगा..!' पापा उसे प्यार से बोले-, 'इसमें बुरा मानने की क्या बात है!'

'नहीं पापा मुझे शर्म आती है'! देख बेटा तू कॉलेज में तो आ ही गया है, 'कोई अच्छी सी नौकरी कर लेना'! 'हॉ पापा मैं ऐसा ही करूँगा,'? समय की गति के साथ योगेश के पानी बताशे का ठेला दुकान में तब्दील हो चूका था, उसके पानी बताशे का टेस्ट अब पुरे शहर में मशहूर हो चले थे, साथ ही उसने चाट पकोडी, खाने की नई नई चीज बनाना भी शुरू कर दी थीं दूसरे शहर में नौकरी लगने के बाद लक्की ने फिर कभी नहीं जाना, कि पापा का धंधा कैसा चल रहा है? लक्की की नौकरी कुछ महीनों तक तो अच्छी चलीं वह बहुत खुश था, किन्तु प्रायवेट कम्पनी की नौकरी मतलब टारगेट पर टारगेट..,! कुछ दिन के लिए वह अपने घर लोट आयाँ एक दिन वह उदास होकर सोफे पर लेटा हुआ था, तभी माँ ने पूछा 'क्या हुआ... क्यों उदास है?'

'कुछ नहीं माँ,'! माँ ने योगेश को लक्की के उदास होने की बात बताईं योगेश ने पूछा - 'क्या हुआ इतना उदास क्यों है, बेटा'! लक्की उदास होकर बोला, 'पापा मैं इतनी मेहनत करता हुँ, इसके बावजूद भी कम्पनी का मैनेजर खुश नहीं होता'! 'साथ ही नए नए टारगेट देता रहता हैं सेलेरी भी ज्यादा नहीं देते, किन्तु मेहनत डबल कराते है!, उसी समय दो लडके आकर बोले -,'मालिक दुकान का जो काम आपने बताया था, वह हो गया है!, योगेश उन दोनों के पास गया और उन्हें पांच पांच हज़ार रूपये दिए, दोनों खुश होकर जा रहे थे, तभी योगेश ने वापस बुलाया, उन्हें उनकी सेलेरी भी दे दीं लक्की यह देख बोला-'पापा आपने इन दोनों को इतने पैसे क्यों दिए'? वह बोला 'यह दोनों अपनी दुकान पर काम करते है, मेहनती लडके है'!, लक्की का मुंह खुला के खुला रह गया! वह सोचने लगा इतनी तो मेरी भी सेलेरी नहीं हैं पापा आपने दुकान कब? बेटा जब तुम बाहर नौकरी की तैयारी कर रहें थे, तब! अब अपनी दुकान बडी हो गई है, तुम्हारे जैसे युवा ख़ुशी ख़ुशी काम कर रहे है! 'अपने 'हुनर' को ही काम धंधा बना रहे हैं! बिना शर्म के! जितनी मेहनत करोगे उतना फायदा मिलेगा' 'सॉरी पापा मैं आपके काम को हमेशा छोटा समझता रहा..! मैं कितना बडा मुर्ख था! जो नौकरी के पीछे भागता रहा..,! 'कोई बात नहीं बेटा-'जब जागो तभी सवेरा'।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	124	2121	2700
उडद	17	4400	8651
सोयाबीन	8500	4400	4875
गैहु	1751	2411	2900
चना	76	5153	5406
मसुर	66	5400	6000
धनिया	378	5358	7350
लहसुन	9500	5500	24500
मैथी	722	4801	6320
अलसी	1710	4850	5211
सरसो	494	4796	5191
तारामीरा	9	4731	4797
इसबगोल	33	9800	17031
प्याज	12000	421	2151
कलोंजी	40	13702	16252
डॉलर	3	9400	12481
तिल्ली	16	14700	16500
मटरसुखी	2	2261	2561
असालीया	28	8401	10853

कार्यालय नगर परिषद भानपुरा जिला मंदसौर (मप्र)

क्रमांक/ 1920/न.प./2023 भानपुरा दिनांक –07.12.2023

भवन/भूमि स्वामियों का नाम परिवर्तन किये जाने के संबंध में सूचना

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि -नगर पालिका अधिनियम 1968 की धारा 150-151 के अंतर्गत इस कार्यालय मे निम्नानुसार आवेदन/ आवेदकगणो द्वारा नगर परिषद रिकार्ड में दर्ज निम्नानुसार आधारों पर गृह स्वामियो ने अपने नाम के सम्मुख दर्षित माध्यम अनुसार दर्ज किये जाने हेतु आवेदन (प्रकरण) प्रस्तुत किया है। परिवर्तन किये जाने में जिस किसी को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 15 दिवस में इस कार्यालय में आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। अवधि समाप्त होने के उपरांत आवेदन/आवेदकगणो का नाम रजिस्टर हाउस में संबंधित गृह क्रमांक पर अंकित किया जावेगा और आपकी कोई आपत्ति मान्य नही होगी।

क्रं.	प्र.क्रं.	हस्तातरणकर्ता का नाम	हस्तांतरितती का नाम	हस्तांतरित की जाने वाली सम्पत्ति	आधार
1	160	बालाराम पिता जगन्नाथ	आशा पति दिनेशजी	भवन क्रमांक 1703 घोड़ापोल मोहल्ला वार्ड क्रमांक 12	वंशानुक्रम
2	161	अनुसुईया पति सरेन्द्र मोहन शर्मा	गायत्री पति राकेश कुमार	भवन क्रमांक 2804 नाकोड़ा कालोनी वार्ड क्रमांक 01	विक्रय पत्र
3	162	ललित पिता भंवरलाल	ललित पिता भंवरलाल, गुड्डी पति ललित	भूमि सर्वे क्रमांक 1303/3/1/7 रकबा 0.005 हे. याने 571 वर्गफीट तिजोरी कालोनी वार्ड क्रमांक 01	सह स्वामित्व रजिस्ट्रीय
4	163	केजर पिता फरबरुद्दीन बोहरा	फातिमा पति आबिद हुसैन	भवन क्रमांक 772 बोहरा मोहल्ला वार्ड क्रमांक 07	विक्रय पत्र
5	164	नाकोडा डेवलपर्स भानपुरा	संजय सोनी पिता राधेश्यामजी	भूखण्ड क्रमांक 71 अम्बे रेसीडेंसी कालोनी वार्ड क्रमांक 07	विक्रय पत्र
6	165	मनोहरलाल प्रभुलाल	चित्रा पति हरिओम, विनोद कुमार पिता लालचन्द्रजी	भूमि सर्वे क्रमांक 1200/2/मिन-1/मिन-1 में से रकबा 0.006 हे. याने 666 वर्गफीट वार्ड 15, हनुमान गड़ी भानपुरा	विक्रय पत्र डायवर्शन
7	166	निलेश उर्फ पंकज मांदलिया वगैरा	जावेद पिता अशरफ हुसैन	भूमि सर्वे क्रमांक 1378 पेकि रकबा 0.007 हे. याने 750 वर्गफीट कंकाली माता मंदिर वार्ड क्रमांक 02	विक्रय पत्र डायवर्शन
8	167	सत्यनारायण पिता रामसुखजी	कैलाशदेवी पति नरेन्द्र नाथ	भवन क्रमांक 1509 ओसवाल मोहल्ला वार्ड क्रमांक 12	वंशानुक्रम

विनोद शिव भानपिया	रेहाना डॉ. जाकिर	मकसूद अंसारी	मोहम्मद अशफाक
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	प्रभारी राजस्व	मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर परिषद भानपुरा	नगर परिषद भानपुरा	नगर परिषद भानपुरा	नगर परिषद भानपुरा

संसद में सुरक्षा चूक, चार जन गिरफ्तार

नई दिल्ली, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। देश की संसद में सुरक्षा चूक की घटना को लेकर लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला ने संसद के अंदर विजिटर्स की एंट्री बंद कर दी है। दरअसल विजिटर्स पास लेकर आए लोगों को रिसेप्शन एरिया से वापस भेज दिया गया। बुधवार सुबह कई सांसदों की पत्नी संसद की नई बिल्डिंग देखने आई थी। हालांकि, अधिकारियों ने बताया कि विजिटर्स एंट्री रोकने को लेकर अब तक कोई लिखित निर्देश नहीं आया है। आमतौर पर विजिटर पास दो घंटे के लिए जारी किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि सदन में हुई घटना चिंता का विषय है।

लोकसभा की कार्यवाही के दौरान बुधवार दोपहर एक बजे दो युवक विजिटर्स गैलरी से नीचे कूद गए। वे सदन की बेंच पर कूदने लगे। उन्होंने सदन में पीले रंग का धुआं फैला दिया। सांसदों ने उन्हें पकड़ा और सुरक्षाबलों को सौंप दिया। घटना के बाद पूरे सदन में अफरा-तफरी का माहौल हो गया। लोकसभा स्पीकर ने सदन की कार्यवाही को दोपहर 2 बजे तक स्थगित कर दिया। इसके बाद दोपहर 2 बजे सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू हुई।

महिला सहित 4 लोग गिरफ्तार...

बताया जा रहा है कि जो दो लोग कार्यवाही के दौरान घुसे, उनका नाम मनोरंजन और सागर है। दोनों युवक सांसद विजिटर पास पर सदन में आए थे। वहीं, सदन के बाहर जिस महिला और पुरुष ने पीले रंग का धुआं छोड़ा, उनका नाम नीलम और अमोल है। सुरक्षाकर्मियों ने सभी को गिरफ्तार कर लिया है। इस दौरान ये लोग नारेबाजी करते देखे गए।

संसद पर आतंकी हमले की 22वीं बरसी पर सुरक्षा चूक...!

ये घटना बुधवार को तब हुई जब देश संसद पर आतंकी हमले की 22वीं बरसी मना रहा था। साल 2001 में 13 दिसंबर को ही पुरानी संसद की इमारत में 5 आतंकियों ने हमला किया था। इसमें दिल्ली पुलिस के 5 जवान समेत 9 लोगों की मौत हुई थी। पीएम मोदी समेत कई नेताओं ने बुधवार को संसद की कार्यवाही शुरू होने से पहले हमले में शहीद हुए जवानों को संसद भवन के बाहर श्रद्धांजलि दी थी। पीएम मोदी और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड ने शहीदों के परिवार से मुलाकात भी की थी।

कांग्रेस ने सुरक्षा चूक पर केंद्र से जवाब मांगा...

संसद में सुरक्षा चूक को लेकर कांग्रेस ने केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- गृह मंत्री अमित शाह को दोनों सदनों में आकर इस घटना पर बयान देना चाहिए। हमें उम्मीद है कि सरकार इसे बहुत गंभीरता से लेगी। कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि संसद में आतंकी हमले की 22वीं बरसी पर सुरक्षा में बड़ी चूक हुई है। हालांकि घटना उस हमले जैसी नहीं है, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि जरूरी सावधानियां नहीं बरती गई।

पन्नू ने दी थी संसद पर हमले की धमकी...

संसद में हमले को लेकर दिल्ली पुलिस पहले से अलर्ट पर थी। दरअसल, खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने संसद पर हमले की धमकी दी थी। अमेरिका में रहने वाले पन्नू ने वीडियो जारी करके कहा था- हम संसद पर हमले की बरसी वाले दिन यानी 13 दिसंबर या इससे पहले संसद की नींव हिला देंगे। पन्नू ने संसद पर हमले के दोषी अफजल गुरु के साथ एक पोस्टर जारी किया था। पन्नू का वीडियो सामने आने के बाद दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी ने कहा था- किसी को भी कानून-व्यवस्था बिगाड़ने की इजाजत नहीं दी जाएगी। जब संसद चलती है, तो हम हाई अलर्ट पर रहते हैं। ताकि कोई भी किसी तरह की गड़बड़ी न फैला सके।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान विभिन्न योजनाओं का प्रचार कर लाभार्थियों को दिया जाएगा लाभ

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव द्वारा बताया गया कि भारत सरकार एवं राज्य सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है, की प्रमुख योजनाओं का लाभ लक्षित लाभार्थियों तक समयबद्ध तरीके से पहुंचे। इसके लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न जन कल्याण योजना का संचालन राज्य स्तर की सहभागिता से क्रियान्वयन किया जा रहा है। समाज के अंतिम व्यक्ति तक योजना की पहुंच को सुगम बनाए जाने के उद्देश्य से विकसित भारत संकल्प यात्रा नाम से भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की जा रही है। विकसित भारत संकल्प यात्रा का प्रमुख उद्देश्य प्रमुख योजनाओं का लाभ, लक्षित लाभार्थियों, खास तौर से वंचित व आकांक्षी लोगों तक समयबद्ध तरीके से पहुंचे। जन सामान्य में योजनाओं का प्रचार प्रसार एवं जागरूकता पैदा करना वंचितों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान विभिन्न योजनाओं का प्रचार कर विभागों द्वारा लाभार्थियों को लाभ दिया जाएगा।

लूट करने वाले 2 आरोपियों को 4-4 वर्ष का सश्रम कारावास

नीमच, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। श्रीमान सुशांत हुद्दार, जिला एवं सत्र न्यायाधीश महोदय, जिला नीमच द्वारा चलती हुई मोटरसाईकल से मोबाईल की लूट करने वाले दो आरोपीगण (1) सूरज पिता दिलीप खटीक, उम्र-21 वर्ष एवं (2) शेलेन्द्र पिता बंशीलाल नाथबाबा, उम्र-21 वर्ष, दोनों निवासीगण-ग्राम पडदा, थाना मनासा, जिला नीमच को धारा 392/34 भारतीय दण्ड संहिता, 1860 के अंतर्गत 04-04 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 5000-5000रू अर्थदण्ड से दण्डित किया गया।

प्रकरण में शासन की ओर से पैरवी करने वाले विशेष लोक अभियोजक श्री चंद्रकांत नाफडे द्वारा घटना की जानकारी देते हुए बताया कि फरियादी रामचंद्र बालाई जो कि ग्राम झालरी में प्राथमिक शिक्षक के पद पर पदस्थ हैं, उन्होंने दिनांक 23.06.2021 को पुलिस थाना नीमच सिटी में उपस्थित होकर रिपोर्ट लेख कराई की वह ग्राम झालरी से स्कूल समाप्त होने के पश्चात् साथी शिक्षक मुकेश भेपारिया के साथ वापस नीमच दिन के लगभग 03 बजे मोटरसाईकल से आ रहे थे। रेवली-देवली बस स्टेण्ड के पास पीछे बैठे फरियादी ने उसकी जेब से वीवो कंपनी का स्मार्ट फोन जैसे ही निकाला तभी पीछे से एक अपाचे मोटरसाईकल पर तीन व्यक्ति आये और पीछे बैठे व्यक्ति ने झपट्टा मारकर फरियादी का मोबाईल छीनकर भाग गये। दोनों ने उनका पीछा किया किंतू वह पकड में नहीं आये, जिस कारण फरियादी ने घटना की रिपोर्ट पुलिस थाना नीमच सिटी पर की, जिस पर से अपराध क्रमांक 300/2021 की प्रथम सूचना रिपोर्ट पंजीबद्ध की गई। प्रकरण की विवेचना एएसआई आर. एन. दहियॉ द्वारा की गई। विवेचना के दौरान उन्होंने पता लगाया की थाना रामपुरा के एक अपराध में इसी प्रकार की घटना में आरोपीगण को गिरफ्तार किया गया हैं, जिनसे पूछताछ कियें जाने पर उन्होंने अपराध को स्वीकार किया तथा उनके द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर लूटे हुए मोबाईल को जप्त किया जाकर शेष आवश्यक अनुसंधान उपरांत अभियोग पत्र नीमच न्यायालय में प्रस्तुत किया गया

अपराध की गंभिरता को देखते हुए शासन द्वारा इस प्रकरण को जघन्य एवं सनसनीखेज प्रकरण के रूप में चिन्हित किया गया। विचारण के दौरान एक अभियुक्त की उम्र 18 वर्ष से कम होने से उसे बाल अपचारी घोषित कर उससे संबंधित प्रकरण को विचारण हेतु बाल न्यायालय में भेजा गया तथा शेष दोनों आरोपीगण के संबंध में विचारण के पश्चात् उपरोक्त निर्णय पारित किया गया। अभियोजन द्वारा माननीय जिला एवं सत्र न्यायालय, नीमच के समक्ष विचारण के दौरान फरियादी व विवेचक सहित सभी महत्वपूर्ण साक्षीगण के बयान कराकर अभियुक्तगण के विरूद्ध अपराध को संदेह से परे प्रमाणित कराकर घटना की गंभीरता को देखते हुए उनको कठोर दण्ड से दण्डित किये जाने का निवेदन किया गया, जिससे सहमत होकर माननीय न्यायालय द्वारा आरोपीगण को उपरोक्त दण्ड से दण्डित किया गया। न्यायालय में शासन की ओर से पैरवी विशेष लोक अभियोजक श्री चंद्रकांत नाफडे द्वारा की गई।

पांच हजार रू. की रिश्वत की मांग करने वाले पटवारी को 4 वर्ष का सश्रम कारावास

नीमच, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। श्रीमती सोनल चौरसिया, विषेष न्यायाधीष (भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम), जिला-नीमच द्वारा आवेदक की कृषि भूमि की पावती बनाये जाने हेतु 5000रू. रिश्वत की मांग करने वाले तथा 3500रू रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ पकडे जाने वाले पटवारी प्रकाश पिता कन्हैयालाल जैन, उम्र-51 वर्ष, पटवारी हल्का नंबर 33, स्थाई निवासी-ग्राम थडौद, तहसील सिंगोली, जिला नीमच को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 7 एवं 13(1)(बी), 13(2) के अंतर्गत 04-04 वर्ष के सश्रम कारावास एवं कुल 10000रू अर्थदण्ड से दण्डित किया।

श्री विवेक सोमानी, विशेष लोक अभियोजक द्वारा घटना की जानकारी देते हुए बताया कि दिनांक 10.12.2019 को आवेदक राधेश्याम पाटीदार ने पुलिस अधीक्षक महोदय विपुस्था, लोकायुक्त कार्यालय, उज्जैन के समक्ष उपस्थित होकर एक शिकायती आवेदन पत्र दिया जिसके अनुसार उसके पिताजी के स्वर्गवास हो जाने से उसके, चार भाईयों व उसकी माताजी के बीच कृषि भूमि के पांच बराबर हिस्से हुए थें, जिसमें से एक हिस्सा उसको मिला हैं, जिसकी पावती बनाने हेतु वह हल्का नंबर-33, तहसील जावद के पटवारी प्रकाश जैन से कई बार मिला किंतू उसके द्वारा पावती बनाये जाने के लिए 5000रू की रिश्वत मांग की गई। आवेदक द्वारा प्रस्तुत शिकायत आवेदन पत्र पर कार्यवाही किये जाने हेतु पुलिस अधीक्षक, लोकायुक्त द्वारा श्री राजेन्द्र वर्मा, निरीक्षक को कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया, जिस पर से उनके द्वारा कार्यवाही करते हुए डिजीटल वाईस रिकार्डर के माध्यम से आवेदक व आरोपी के मध्य रिश्वत लेनदेन की बातचीत को रिकार्ड किया गया, जहां पर आरोपी द्वारा 500रू रिश्वत लेते हुए शेष 4500रू लेकर दिनांक 12.12.2019 को अपने ग्राम दडौली स्थित कार्यालय पर बुलाया। दिनांक 12.12.2019 को फरियादी 3500रू लेकर ट्रेप दल के साथ आरोपी के कार्यालय पर पहुंचा, जहां पर लोकायुक्त पुलिस द्वारा आरोपी को 3500रू की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकडा गया। इसके पश्चात मौके की समस्त कार्यवाही कर वापस लोकायुक्त कार्यालय उज्जैन आकर शेष आवश्यक अनुसंधान उपरांत अभियेग पत्र विशेष न्यायालय (भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988) नीमच में प्रस्तुत किया गया। श्री विवेक सोमानी, विशेष लोक अभियेजक द्वारा माननीय न्यायालय के समक्ष विचारण के दौरान आवेदक, ट्रेपदल के सदस्य, पंचसाक्षी व विवेचक सहीत सभी महत्वपूर्ण गवाहों के बयान कराते हुए अपराध को संदेह से परे प्रमाणित कराकर आरोपी को कठोर दण्ड से दण्डित किए जाने का निवेदन किया गया। जिस पर से माननीय न्यायालय द्वारा आरोपी को उपरोक्त दण्ड से दण्डित किया गया। न्यायालय में शासन की ओर से पैरवी श्री विवेक सोमानी, विशेष लोक अभियोजक द्वारा की गई।

पावर को सलाम- प्रदेश के नवनियुक्त उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा के मंदसौर श्याम नगर स्थित घर के बाहर बुधवार को आनन-फानन में पेच वर्क किया गया। यहां काफी समय से सड़क पर गड्ढे थे, जो नपा प्रशासन को नहीं दिख रहे थे। जबकि, वे चुनाव पूर्व तक प्रदेश के वित्त मंत्री भी थे।

राज्य शैक्षिक उपलब्धि सर्वेक्षण को लेकर सांसद गुप्ता ने लोकसभा में किया प्रश्न

मंदसौर, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। राज्य शैक्षिक उपलब्धि सर्वेक्षण को लेकर सांसद गुप्ता ने लोकसभा में प्रश्न किया। सांसद गुप्ता ने कहा कि सरकार एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने हाल ही में राज्य शैक्षिक उपलब्धि सर्वेक्षण (एसईएएस) कराया है। इसकी इस सर्वेक्षण की मुख्य विशेषताओं क्या रही एवं इसके लक्ष्य और उदेश्य क्या है। सांसद गुप्ता ने कहा कि इस सर्वेक्षण में भाग लेने वाले पूरे देश के विद्यार्थियों और विद्यालयों की कुल संख्या कितनी है उक्त सर्वेक्षण देश में शिक्षा की गुणवत्ता बढाने और विद्यार्थियों को कौशल प्रदान करने में किस प्रकार सहायक है।

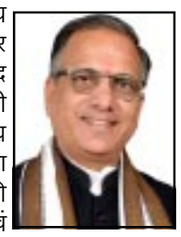

प्रश्न के जवाब में शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी ने बताया कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की एक घटक इकाई राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र समग्र विकास के लिए ज्ञान का प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा और विश्लेषण (परख), शिक्षा मंत्रालय के तहत एक मानक सेटिंग निकाय है जिसने इसी वर्ष 3 नवंबर को 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कक्षा 3, 7 और 9 के छात्रों को कवर करते हुए राज्य शैक्षिक उपलब्धि सर्वेक्षण (एसईएएस) -23 आयोजित किया है। एसईएएस-23 की उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक ब्लॉक स्तर पर अधिगम के परिणामों को समझने के लिए छात्रों की सेंपल साइज़ का विस्तार करना है, जो जिले में एक रणनीतिक बदलाव है। उन्होने बताया कि इस सर्वेक्षण का उदेश्य प्रत्येक शैक्षिक चरण अर्थात मूलभूत, प्रारंभिक और मध्य के अंत में मूलभूत साक्षरता, मूलभूत संख्यात्मकता, भाषा और गणित में छात्रों की अधिगम की दक्षताओं का मूल्यांकन करना, भविष्य के सर्वेक्षणों के साथ मूल्यांकन परिणामों की वैधता और तुलनात्मकता सुनिश्चित करना, शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करने वाले कारकों को समझने के लिए प्रश्नावली के माध्यम से पृष्ठभूमि डेटा एकत्र करना, साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने के लिए शैक्षिक नीति निर्माताओं को अंतदृर्ष्टि प्रदान करना, योग्यता आधारित मूल्यांकन में प्रत्येक चरण (मूलभूत, प्रारंभिक और मध्य) के अंत में शिक्षक प्रशिक्षण को प्रोत्साहन देना आदि है। इस व्यापक सर्वेक्षण में देश के 5917 ब्लॉकों के 3 लाख स्कूलों से लगभग 40 लाख छात्रों को शामिल किया गया था। एसईएएस-23 प्रत्येक चरण के अंत में ब्लॉक स्तर पर शिक्षा प्रणाली की सम्पूर्ण स्थिति को दर्शाता है और उन क्षेत्रों में अंतदृर्ष्टिप्रदान करता है छात्रों के अधिगम के स्तर को बढाने के उद्देश्य से अल्पकालिक, मध्यावधि और दीर्घकालिक अंत: क्षेपों की योजना बनाने के लिए राज्य संघ राज्य क्षेत्र सरकार की सहायता करना शामिल है।

अफीम तस्करों को 10-10 साल की सजा

एक-एक लाख रूपए जुर्माना भी भरना होगा

मंदसौर, 13 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। विशेष न्यायाधीश एनडीपीएस एक्ट मंदसौर द्वारा आरोपी जासिम उर्फ यासिन पिता हकीमखां मेवाती उम्र 37 साल निवासी ग्राम उमठ पालिया थाना औद्योगिक क्षेत्र जावरा जिला रतलाम व रामनिवास उर्फ छोटिया पिता हरिराम चौहान उम्र 35 साल निवीसग्राम मजेसरी थाना भावगढ़ जिला मंदसौर को अफीम तस्करी करने का दोषी पाते हुए 10-10 वर्ष का सश्रम कारावास और 1-1 लाख रू अर्थदण्ड से दण्डित किया।

अभियोजन मीडिया सेल प्रभारी दीपक जमरा द्वारा यह जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि 08 मार्च 2014 को थाना नारकोटिक्स सेल इंदौर प्रकोष्ठ नीमच के निरीक्षक दलसिंह परमार को मुखबीर सूचना मिली थी कि ग्राम मजेसरी का रामनिवास एवं उसका साथी जामिस उर्फ यासीन अपनी हीरोहोण्डा स्पेलेंडर मोटरसाईकिल से अवैध मादक पदार्थ अफीम लेकर मजेसरी से नीमच राजस्थान तरफ किसी बाहरी तस्कर को देने जायेंगे। यदि ग्राम नयाखेड़ा के पास बायपास रोड़ पर नाकाबंदी की जाये तो सफलता मिल सकती है। मुखबीर सूचना पर कार्यवाही हेतु निरीक्षक दलसिंह परमार मय फोर्स के थाने से रवाना होकर ग्राम नयाखेड़ा के पास बायपास रोड पर पंहुचकर नाकेबंदी की। कुछ देर बाद दलौदा तरफ से एक काले रंग की हीरो होण्डा स्पेलेंडर मोटरसाईकिल पर दो व्यक्ति आते दिखे, जिन्हें पास आने पर हमराह फोर्स की मदद से रोका। दोनों व्यक्तियों के बीच में एक सफेद खाद के कट्टे की थैली रखी थी, जिसमें कुछ भरा हुआ था। दोनों लोगो से नाम पता पुछा तो चालक ने अपना नाम जासिम उर्फ यासीन और पीछे बैठे व्यक्ति ने अपना नाम रामनिवास बताया था। दोनों आरोपियों की तलाशी में उनके कब्जे वाली कट्टे की थैली को चैक करने पर उसके अंदर काला भूरा तरल पदार्थ भरा हुआ मिला था। उक्त तरल पदार्थ को

देखकर, सूंघकर पहचान की थी तो वह अफीम होना पाया गया। उक्त अवैध मादक पदार्थ अफीम का तौल इलैक्ट्रानिक तौल कांटे पर किया गया तो कुल वजन 4 किलो 260 ग्राम होना पाया गया। मौके पर ही आरोपियो को गिरफ्तार किया गया, बाद संपूर्ण कार्यवाही पश्चात मय जप्तशुदा अवैध मादक पदार्थ अफीम जप्त कर थाने पर वापसी उपरांत आरोपियो के विरूद्ध अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। संपूर्ण अनुसंधान उपरांत न्यायालय में अभियोग पत्र प्रस्तुत किया गया। न्यायालय ने अभियोजन द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य एवं तर्कों सें सहमत होकर आरोपी को दोषसिद्ध किया। प्रकरण में अभियोजन का संचालन एडीपीओ दीपक जमरा द्वारा किया गया।

शामगढ़ जलकल विभाग में... पेज 1 से जारी

रूपए एवं आस्था त्रिवेदी द्वारा 9 लाख 57 हजार 479 रूपऐ का गबन सामने आया है। इसके अलावा हाल ही में नामांतरण प्रकरणों में कथित रूप से रिश्वत मांगने का आरोप सिद्ध होने पर नगर परिषद कर्मी दीपक चाष्ट को भी निलंबित किया है। अध्यक्ष श्रीमती यादव ने कहा कि तीनों कर्मचारियों को गबन की राशि के बारें में सूचना पत्र के माध्यम से राशि जमा करने को कहा था। लेकिन, वे राशि जमा नही कर रहे थे। इसलिए दो के खिलाफ प्रकरण दर्ज कराया गया है। बताया जाता है कि निष्पक्ष जांच होगी और उसमें दोषी पाए गए तो इनकी नौकरी जा सकती है।

युवक को लूटकर भाग रहे कंजर को लोगों ने पकड़ा, पुलिस को सौंपा

रतलाम, 13 दिसम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिले के आलोट नगर के समीप ग्राम थूरिया में एक युवक को लूटकर बाइक से भाग रहे एक कंजर को युवक व उसके साथियों ने पकड लिया। उसका साथी बाइक से कूदकर भाग गया। पुलिस ने आरोपित कंजर के खिलाफ लूट का प्रकरण दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। उसके साथी की तलाश की जा रही है।

पुलिस के अनुसार पीडित 23 वर्षीय जुझार पुत्र मोतीलाल निवासी ग्राम थूरिया ने बताया कि वह मंगलवार शाम करीब सात बजे थूरिया रेलवे स्टेशन के सामने अपने घर के बाहर बंधी भैंस का दूध निकाल रहा था। तभी आरोपित काला उर्फ कालू उर्फ शंभू पुत्र हडमत कंजर निवासी ग्राम अरनिया कंजरा डेरा थाना उन्हेल जिला झालावाडा (राजस्थान) व उसका साथी बगैर नंबर की बाइक से उसके पास आए।

आरोपितों ने उसकी जेब से मोबाइल फोन व 1500 रुपये जबरदस्ती निकाले और बाइक पर सवार होकर भागने लगे। शोर मचान पर जुझार का बडा भाई रमेश व भतीजा सुनील आदि पहुंचे व पीछा कर आरोपितों को रोकने का प्रयास किया। इसी बीच कालू का साथी बाइक से कूदकर भाग निकला और कालू बाइक सहित नीचे गिर गया। इससे उसे चोट आई है। कालू को पकडकर लोगों ने वहीं बैठा दिया और पुलिस को सूचना दी। आलोट पुलिस मौके पर पहुंची और कालू को थाने लेकर आई। धारा 292 में प्रकरण दर्ज कर कालू के साथी की तलाश की जा रही है।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल रतलाम
नामान्तरण –सूचना

मण्डल की आवासीय कॉलोनी संजीत मार्ग मंदसौर स्थित भवन क्रमांक LIG.C.21 श्री शांतिलाल कुमावत पिता कस्तूरचंद कुमावत को वर्ष 1988 में आवंटित हुआ था। भवन का विक्रय विलेख दिनांक 22.08.2003 को इनके पक्ष में उप पंजीयक कार्यालय मंदसौर में पंजीबद्ध करवा दिया गया था।

श्री शांतिलाल कुमावत पिता कस्तूरचंद कुमावत द्वारा उक्त भवन का विक्रय श्रीमती नंदकुंवर पति आनंद सिंह मंगोलिया एवं श्री गोपाल सिंह पिता आनद सिंह को कर भवन का विक्रय पत्र दिनांक 22.08.2003 को इनके पक्ष में पंजीयन निष्पादित करवा दिया था। उक्त विक्रय पत्र एवं प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर श्रीमती नंदकुंवर पति आनंद सिंह मंगोलिया एवं श्री गोपाल सिंह मगोलिया पिता आनंद सिंह भवन का नामांतरण अपने नाम करवाना चाहते हैं।

अत: इस सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/परिवार के सदस्य/वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति/उर्ज हो तो वह विज्ञापन प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस में मय ठोस प्रमाण के कार्यालय में प्रस्तुत करे समयावधि व्यतीत हो जाने पर भवन क्रमांक LIG.C.21 संजीत मार्ग मंदसौर का नामान्तरण संयुक्त रूप से श्रीमती नंदकुंवर पति आनंद सिंह मंगोलिया एवं श्री गोपाल सिंह मंगोलिया पिता आनंद सिंह के नाम से कर दिया जावेगा उसके पश्चात कोई भी दावा/आपत्ति/उर्ज मान्य नही होगा।

सम्पदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास
मंडल संभाग-रतलाम (मप्र)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल रतलाम
नामान्तरण –सूचना

मण्डल की आवासीय कॉलोनी गांधीनगर मदसौर स्थित भवन क्रमांक MIG.I. 14 जो की श्री विमल कुमार जैन पिता श्री चाँदमल जैन को मण्डल आदेश क्रमांक 4531 दिनांक 24.09.2001 को आवंटित किया गया था। उक्त भवन का विक्रय विलेख दिनांक 31.05.2006 को उप पंजीयक कार्यालय मंदसौर में निष्पादित किया गया था।

श्री विमल कुमार जैन पिता श्री चाँदमल जैन द्वारा उक्त भवन का विक्रय श्रीमती सुनीता पति श्री बाबूलाल राणा को कर दिनांक 01.12.2009 को भवन का विक्रय पत्र उप पंजीयक कार्यालय मंदसौर मे पंजीयन निष्पादित करवा दिया है। विक्रय पत्र एवं प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर उक्त भवन का नामांतरण श्रीमती सुनीता पति श्री बाबूलाल राणा अपने नाम करवाना चाहती है।

अत: इस सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/परिवार के सदस्य/वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति/उर्ज हो तो वह विज्ञापन प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस में मय ठोस प्रमाण के कार्यालय में प्रस्तुत करे समयावधि व्यतीत हो जाने पर भवन क्रमांक MIG.I. 14 गांधीनगर मंदसौर का नामान्तरण श्रीमती सुनीता पति श्री बाबूलाल राणा नाम से कर दिया जावेगा उसके पश्चात कोई भी दावा/आपत्ति/उर्ज मान्य नहीं होगा।

सम्पदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास
मंडल संभाग-रतलाम (मप्र)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल रतलाम
नामान्तरण –सूचना

मण्डल की आवासीय कॉलोनी कम्बल केंद्र मंदसौर स्थित भवन क्रमांक 2/16 जो की श्री शांतिलाल नलवाया पिता श्री जवाहरलाल नलवाया को आवंटित किया गया था। उक्त भवन का विक्रय विलेख दिनांक 27.01.1989 को पंजीयन निष्पादित किया गया था।

श्री शांतिलाल नलवाया पिता श्री जवाहरलाल नलवाया का स्वर्गवास दिनांक 4.12.2001 को हो चूका है। श्री शांतिलाल नलवाया द्वारा अपने जीवनकाल में भवन की वसीयत दिनांक 17.11.2000 अनुसार श्रीमती स्नेहलता पति हंसराज जैन एवं श्री मयूर नलवाया पिता जम्बू कुमार नलवाया को नामित किया गया था एवं इसी सम्बन्ध में माननीय न्यायालय द्वारा पारित निर्णय द्वारा उक्त भवन का नामांतरण श्रीमती स्नेहलता पति हंसराज जैन एवं श्री मयूर नलवाया पिता जम्बू कुमार नलवाया संयुक्त रूप से अपने नाम करवाना चाहते है।

अत : इस सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/परिवार के सदस्य/वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति/उर्ज हो तो वह विज्ञापन प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस में मय ठोस प्रमाण के कार्यालय में प्रस्तुत करे समयावधि व्यतीत हो जाने पर भवन क्रमांक 2/16 कम्बल केंद्र मंदसौर का नामान्तरण संयुक्त रूप से श्रीमती स्नेहलता पति हंसराज जैन एवं श्री मयूर नलवाया पिता जम्बू कुमार नलवाया के नाम से कर दिया जावेगा उसके पश्चात कोई भी दावा/आपत्ति/उर्ज मान्य नही होगा।

सम्पदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास
मंडल संभाग-रतलाम (मप्र)

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीड्या एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in